॥ श्री तन्त्रदुर्गासप्तशती ॥

(संशोधिता परिवर्द्धिता च)

लेखक :-

ज्योतिर्वित् श्री पं० शिवदत्त त्रिपाठी, शास्त्री

व्या० आ० आ० कर्मकाण्डविशारदः

स्थान–सलेमपुर, पो०–अछल्दा, मण्डल–इटावा [उ० प्र०]

प्रकाशक :—श्री कुमुदेश चन्द्र जैन
स्थान—४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज
कानपुर—१ (उ०प्र०)
फोन नं० ६३४१९

मुद्रक :—एलोरा प्रिन्टर्स, सूटरगंज कानपुर—१ फोन : ४०५२७

प्रथमावृत्ति- चैत्रसुदि ९ नवमी बुधवार संवत् २०३०
ता० ११-४-७३

द्वितीयावृत्ति- २०३३ सन् १९७६

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

(१) **श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी** एम. ए., एल. टी., डी. जी. पी.
लेक्चरार
मकान नं० ७३ मोहल्ला ठाकुरान
मु० पो० लखना, जि० इटावा (उ० प्र०)

(२) **कुमुदेश चन्द्र जैन**
४८/१६२ रेशमगली पचकूचा जनरलगंज,
कानपूर-१ (उ० प्र०)

सङ्केत:— इस पुस्तक का मूल्य नहीं है लोक कल्याणार्थ ही प्रकाशित की गई है। डाक व्यय भेजने पर पुस्तक निःशुल्क भेज दी जायेगी।

आवश्यक वक्तव्य

श्री दुर्गासप्तशती आदि के पाठ व जप आदि में

(१) अध्यायपूर्ति होने पर "श्रीमार्कण्डेयपुराण सावर्णिकेमन्वन्तरे देवीमहात्म्ये प्रथमः ॐ तत्सत्" कहना चाहिये। एवमेव द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः, आदि कहना चाहिये।

(२) इति, अध्याय, वध, तथा समाप्त, इन शब्दों का उच्चारण नही करना चाहिए।

(३) अपने हाथ से लिखित तथा ब्राह्मणेतर से लिखित पुस्तक का पाठ नहीं करना चाहिये।

(४) स्तोत्र व संहिता ग्रन्थों में अन्तिम श्लोक दोवार पढ़ना चाहिए "स्तोत्रेच संहितायान्तु चान्तःश्लोकंपठेद्द्विधा" इतिरुद्रयाले इसप्रमाणसे त्रयोदश अध्याय के समाप्ति में अन्तिम श्लोक दो वार कहना चाहिये।

(५) एवमेव—नमस्कार का जहां प्रसङ्ग हो वहां दो बार या तीनवार कहना चाहिए। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यैनमोनमः इत्यादि।

गणना के लिये वस्तुविचार

श्लोक— नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वानधान्यैर्नचपुष्पकैः।
नचन्दनैर्मृत्तिकया जपसङ्ख्यान्तुकारयेत् ॥१॥

लाक्षांकुसीदं सिन्दूरं गोमयञ्चकरीषिकम् इत्यादि + अर्थात् चावल-हस्त के पर्व-धान्य-पुष्प-चन्दन-मृत्तिको से जप की गणना नहीं करना चहिये। गोवर की गोली-लाख व सिन्दूर आदि की गोली से जप की गणना करें।

(७) अनेकआचार्य हुये हैं प्रत्येक ने अपने मत को ही श्रेष्ठ मानकर स्पष्ट लिख दिया है कि ऐसा न करने पर पाठ निष्फल हो जाता है। समस्तन्यास शापो द्धार-उत्कीलन-मृतसञ्जीवनी जप, कुञ्जिकास्तोत्र, कवच, अर्गला, कीलक पाठ-अन्त में रहस्यत्रयपाठ-वेदोक्त, तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त पाठ-मुद्राप्रदर्शन वेदोक्त पौराणिक व तान्त्रिक विधि से पूजन विधान, नवार्णमन्त्रजप आदि अनेक विधान बतलाये हैं। शायद ही ऐसा कोई सामर्थ्यवान् न हो जो सभी विधान करके पाठ पूर्ण कर सके। यदि कोई सब विधान करके पाठ करता है तो वह प्रशंसा के योग्य है। कलियुग में अभीष्ट देवता का गुणागानही शीघ्र समस्त फलदायक होता है। जितना विधान करने में मन प्रसन्न रहे उतना ही करे वो जितना विधान अधिकयान्यून करना हो उतना सङ्कल्पमे अधिक या न्यूनकर देना चाहिये।

विशेषसङ्केत

श्री तन्त्र दुर्गासप्तशती, प्रकाशित होने पर जब विद्वानों में वितरण की गई सभी लोगों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की तथा जिन लोगों के पास अति प्राचीन हस्त लिखित श्री दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्र, बीजरूप में थे तथा बम्बई तथा वाराणसी में प्राचीन समय में ७०० मन्त्रतन्त्र रूप में प्रकाशित हो चके है। जिन लोगों के पास थे प्राय: अधिक लोगों ने देखने के लिए मेरे पास भेजे तथा ला कर दिये मैंने अपनी मुद्रित पुस्तक से मिलान किया प्राय: सभी मन्त्रों का मिलान एक सा रहा। कुछ ही मन्त्रों में अन्तर निकला। अधिक प्रतियों से उनका मिलान करके संशोधन कर दिया है।

पाठक गण यथेच्छ कोई भी मन्त्र का पाठ या जपकर सकते हैं। सभी बीजमन्त्र शुद्ध हैं। प्राप्त प्रतियों में भी स्थान स्थान में लिखाथा कि क्वचित् पाठभेद: अर्थात् बीजमन्त्रों में भेद लिखे थे। अत: सभी मन्त्र शुद्ध जानना चाहिये। यदि मेरी मुद्रित पुस्तक में संशोधित बीजमन्त्रों का पाठ या

जप न करके वैसे ही पाठ या जप में प्रयोग किये जांयें तो भी सिद्धिप्रद होंगे। क्वचित् पाठभेद, लिखकर वे भी मन्त्र लिखे थे। कुल १० या १२ मन्त्रों में परिवर्तन है।

विशेष आवश्यक निवेदन

तन्त्रदुर्गासप्तशती के पाठ में कवच अर्गला कीलक का पाठ तथा मृतसञ्जीवनी विद्यामन्त्र जप कुञ्जिकास्तोत्र पाठ-रहस्यत्रय- पाठ आदि करने की कोई भी आवश्यकतान हीं हैं केवल आदि में तथा अन्त में यथेच्छ (न्यूनसेन्यून १०८ वार) नवार्णमन्त्र जप परमावश्यक है। यही सिद्धान्त महात्माओं व विद्वद्वन्द से तथा प्रकाशित एवं हस्तलिखित प्रतियों में निश्चित है।

भ्रम निवारण

श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशती के ७०० मन्त्रों में प्रति मन्त्र में "ऐं" इस बीज का प्रयोग किया गया है। यह शङ्का पाठक जनों ने की थी इसका समाधान तन्त्र कोष में सुस्पष्ट है कि– 'ऐं' यह बीज अनेक शक्तियों का बीज है सरस्वती के बीज की तरह 'दुर्गा' का प्रधान बीज होने से 'ऐं' इस बीज का प्रयोग प्रति मन्त्र में किया गया है। इसके अतिरिक्त और जो रहस्य हो वह विद्वद्वन्द जाने। नवार्ण मन्त्र में "ॐ" नहीं लगाना चाहिए विशेष निर्णय आगे लिखा है।

प्राक्कथन

यह तन्त्र रूप में परिणत श्रीतन्त्र दुर्गासप्तशती, संवत् २००० आश्विनमास में विन्ध्याचल (जि० मिर्जापुर उ० प्र०) में भगवती जगन्नियन्त्री जगदम्बा श्री विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शनार्थ आये हुये एक महात्माजी की अति प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से लिखने के लिये उनतपो मूर्ति महात्मा जी की विशेष प्रार्थना करने पर लिखने की आज्ञा पाकर लिखकर तथा बहुत समय तक अनुभव करके सत्य प्रतीत होने पर प्रकाशित करने पर विद्वानों ने भी पूर्ण रूप से अनुभव किया तथा सफल हुये, अतएव प्रथमवृत्ति शीघ्र समाप्ति हुई।

महात्मा एवं विद्वानों ने यह आज्ञादी कि द्वितीयावृत्ति शीघ्र प्रकाशित की जाये कि जिसमें पाठ करने योग्य श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती तथा संशोधित व परिवर्धित परमोपयोगी विषय भी रक्खें जायें। उन्हीं महात्माओं एवं विद्वानों की आज्ञानुसार द्वितीयावृत्ति भी उसी रूप में प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में सादर समर्पित है। प्रथमावृत्ति वितरित होने पर

दयालु महात्मा एवं विद्वानों ने अतिप्राचीन हस्तलिखित तन्त्र रूप में परिणत दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्र दिखालाये तथा बम्बई व वाराणसी से प्रकाशित प्रतियां भी देखने में आई। प्राय: सभी मन्त्र मेरे प्रकाशित मन्त्रों से अक्षरश: मिले मुझे विशेषसन्तोषप्राप्त हुआ। कुछ मन्त्रों में अन्तर निकला बहुत मत से संशोधित करके प्रकाशित हैं। यह मैं नहीं कह सकता हूँ कि श्री दुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्रों का तन्त्ररूप में परिणत किस मूलाधार से है इतना अवश्य है कि पाठ व जप करने से सभी प्रयोग सफल होते हैं।

सङ्केत– इस पुस्तक में तन्त्र मन्त्रों से अतिरिक्त सभी विषय अन्यान्य प्रमाणित ग्रन्थों से लिये हैं। श्रीकुमुदेशचन्द्र जी जैन मकान नं० ४८/१६२ रेशमगली-पचकूचा जनरलगंज कानपुर की विशेष प्रार्थना पर यह पुस्तक प्रकाशित करने को दी। श्री कुमुदेश चन्द्रजी भगवती श्रीदुर्गादेवी के परम भक्त हैं कामाख्या आदि स्थानों में सुचारुरीति से भ्रमणकर चुके हैं आपने ही मेरा लिखित "श्री शिवसूत्ररहस्यम्" नामका ग्रन्थ प्रकाशित किया है जो अभी तक प्रकाशितन था अर्थात् जिसमें अइउण्,, आदि १४ सूत्रों में ज्योतिष तन्त्र मन्त्रादि विषय विस्तार पूर्वक वर्णन किये हैं।

सुजन समुदाय से नम्रनिवेदन है कि यदि दुर्गासप्ती के ७०० मन्त्रों का तन्त्ररूप में परिणत करने का मूलाधार ज्ञात हो तथा इस पुस्तक में जो मुद्रण आदि दोष रह गये हों तो अवश्य सूचित करने की कृपा करें ताकि अग्रिम संस्करण में उनका सुधार हो सके।

यदत्रस्खलितङ् किञ्चित् प्रमादेन भ्रमेणवा।
तत्सर्वं शोधयन्त्वार्या: कस्यन स्खलितम्मन: ॥१॥

गच्छत: स्खलनङ् क्वापि भवत्येव प्रमादत:।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जना: ॥२॥

विनीत–शिवदत्त शास्त्री

सङ्केत– कवच, अर्गला, कीलक के पूर्व शापोद्धारउत्कीलन तथा मृत संजीवनी विद्या का जप का विधान है, किन्तु विद्वत्परम्परा का सिद्धान्त यह है कि यदि श्री दुर्गासप्तशती का षडङ्ग (कवच[1], अर्गला[2], कीलक[3] तथा त्रयोदशाध्याय के बाद रहस्यत्रय) सहित पाठ कर लिया जाय तो श्रीदुर्गासप्तशती में शापोद्धारादि की कोई भी आवश्यकता नहीं है। वस्तुत: यही मत

मेरी भी गुरुपरम्परा का है। अथवा जैसा विद्वद्वृन्द निर्णय करें वैसा स्वेच्छानुसार करें। यह निर्णय दुर्गा सप्तशती के पाठ ही का है तन्त्र दुर्गासप्तशती के पाठ में षडङ्ग पाठ भी नहीं करना चाहिये।

शापोद्धारमन्त्र—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रांक्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा। आदि तथा अन्त में ७ बार जपे।

उत्कीलनमन्त्र—ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशतिचण्डिके उत्कीलनंकुरु कुरु स्वाहा। आदि तथा अन्त में २१ बार जपे।

मृतसंजीवनीविद्यामन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृत संजीवनिविद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा। आदि तथा अन्त में ७-७ बार जपे।

सङ्केत— मरीचकल्प तथा रुद्रयामलान्तर्गत दुर्गाकल्प में चन्डिकाशापविमोचन विधान भिन्न २ क्रम से लिखा है। श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती में षडङ्गपाठ करने की आवश्यकता नहीं है। आदि तथा अन्त में नवार्णमन्त्र जपना आवश्यक है।

विशेष आवश्यक सङ्केत

जिस स्थान में भगवती देवी की मूर्ति हो वहां श्रीदुर्गा पूजा यन्त्र आदि कुछ भी विधान की आवश्यकता नहीं है। वहां तो भगगती ही यन्त्रादि रूप में वर्तमान है। एवम् जहां शतचण्डी आदि अनुष्टान करना या करवाना हो वहां तथा जहां भगवती की मूर्ति न हो वहां समस्त विधान शत्त्यनुसार करे। दैनिक पूजन पाठ व जप में समस्त विधान की आवश्यकता नहीं है।

कलियुग में अभीष्ट देवता का गुणगान ही समस्त कल्याणप्रदहोता है। विशेष विधान के भ्रम में नहीं पड़ना चाहिये। केवल श्रद्धा-विश्वास तथा मनकी एकाग्रता ही प्रधान मानी गई है। प्रत्येक अनुष्ठान-पूजन व जप आदि में शास्त्र-देश-काल व अपनी सामर्थ्य देखकर के ही प्रवृत्त होना चाहिये।

श्रीदुर्गासप्तशती में कवच

शूलेनपाहिनो देवि पाहिखड्गेनचाम्बिके।
घण्डास्वनेननः पाहि चापज्यानिस्वनेन च ॥१॥
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिके रक्ष चण्डिके।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥२॥
सौम्यानियानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानिचात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥३॥
खड्गशूलगदादीनियानिचास्त्राणितेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनितैरस्मान्रक्ष सर्वतः ॥४॥

कवच के तन्त्र रूप में क्रमशः मन्त्र—

ॐ ऐं फ्रें नमः ॥१॥ ॐ ऐं क्रीं नमः ॥२॥ ॐ ऐं म्लूं नमः। ॐ ऐं घ्रें नमः।

शारदातिलक पञ्चमपटल में हवन वस्तुयें

१— अध्याय— गुग्गुल वा बिल्वफलहोम (तृतीयांश होम करना चाहिये)
२— „ इक्षु (ऊँख) का हवन। पर्वमात्र प्रतिआहुति में हवन।
३— „ ३८वें मन्त्र में मधु। अध्यायान्त में नार (नारङ्गी) हवन।

४— ,, लवङ्ग हवन ।
५— ,, कदलीफल (केला की फलों का) हवन ।
६— ,, गुग्गुल होम वा जम्बीर फल (नीबू) का हवन ।
७— ,, २३वें मन्त्र में काला जीरा हवन ।
८— ,, रक्तबीज प्रसङ्ग में रक्त चन्दन हवन । अध्यायान्त में तज का हवन ।
९— ,, ३५वें मन्त्र में सर्षप (सरसों) काहवन । अन्त में कर्पूर-कस्तूरी हवन ।
१०— ,, २६वें मन्त्र में सर्षप (सरसों) हवन । अन्त में जावित्री-लवङ्ग-दाडिमफलहोम ।
११— ,, पायस (खीर) पूप (पुआ) हवन । ३९वें मन्त्र में कालीमिर्च हवन ।
१२— ,, कर्पूरदाडिमहवन ।
१३— ,, श्रीफल-कुङ्कुमहोम ।

सङ्केत—उपरिलिखित कवच के चार मन्त्रों में हवन नहीं करना चाहिए ।

प्रकाशकीय वक्तव्य

(द्वितीया वृत्ति पर)

यह प्रसङ्ग अनेकों बार महात्माओं से सुना था कि ७०० श्रीदुर्गासप्तशती के मन्त्रों का तन्त्र रूप में वर्णन है, किन्तु विशेष अन्वेषण करने पर तथा कामरूया आदि स्थानों में भ्रमण करके पता लगाने पर भी तन्त्र रूप में ७०० मन्त्र श्री दुर्गासप्तशती के नहीं मिले । इतना होने पर भी अन्वेषण करने का प्रयत्न बराबर बना ही रहा था एक समय परम पूज्य श्री १०८ गुरुदेव श्री पं० शिवदत्तजी त्रिपाठी शास्त्री ज्योतिर्वित्-कर्मकाण्ड विशारद व्याकरणायुर्वेदाचार्य-श्री शिवसूत्ररहस्यम् आदि अनेक ग्रन्थों के लेखक प्रवक्ता से तन्त्र रूप में परिणत श्रीदुर्गासप्तशती के ७०० मन्त्रों का विवरण पूछा तो उन्होंने लिखित पुस्तक मुझे दिखलाई थी मैंने मुद्रण करने के लिए उनसे विशेष प्रार्थना की उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके वह पुस्तक दी आज पुस्तक द्वितीयावृत्ति में भी प्रकाशित होकर आप लोगों के कर कमलों में सादर समर्पित है । पुस्तक का कोई मूल्य नहीं हैं प्रेम से भगवती को सुनाना ही इसका मूल्य है ।

नम्र निवेदन यह है मानवता स्वभाववश अशुद्धियों का होना स्वाभाविक है जहां जो भी अशुद्धि रह गई हो तथा यान्त्रादि दोष हों वहाँ सुधार लें तथा सूचित करने की कृपा करें । ताकि अग्रिम संस्करण में सुधार हों सके । पुस्तक को निःशुल्क समझकर दुरुपयोग न करने का ध्यान रहे । प्रकाशक एवम् लेखक के परिश्रम को सफल बनाने की कृपा रहे ।

सङ्केत—इस पुस्तक में केवल त्रयोदश अध्याय ही श्री तन्त्ररूप में परिणत दुर्गासप्तशती, के श्रीमान् पूज्य १०८ श्री पं० शिवदत्तजी शास्त्री को किसी सिद्ध महात्माजी की अतिप्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से प्राप्त हुये थे । शेष अन्य सभी विषय श्रीमान् परमपूज्य शास्त्री जी ने अन्याय प्रमाणित ग्रन्थों से लिखकर पूर्ण किये हैं ।

भवदीयानुचर:
कुमुदेशचन्द्र जैन

॥ आदिशक्त्यैनमः ॥

॥ श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती ॥

विश्वेश्वरींविश्वमयींविरूपा–
मज्ञानहन्त्रींविमलस्वरूपाम् ।
शश्वत्प्रसन्नाङ्करुणावतारान्–
तन्त्रस्वरूपाञ्चनमामिदुर्गाम् ॥१॥

चिदानन्दरूपे हरीशादिवन्द्ये–
सदामन्दहासे जगद्भीतिनाशे ।
चिदानन्ददेत्वञ्च तन्त्रस्वरूपे–
जनं पाहिदीनन्तवार्चाविहीनम् ॥२॥

नजानातिविष्णु:शिवोनैववेत्ति–
स्वयम्भू: स्वयन्नैवजानातिमात: ।
चरित्रन्दयाधारिकेतेविचित्रङ्–
कथन्मन्दवृद्धिर्जन:स्यात्समर्थ ॥३॥

तथाप्यम्बलोलोपकारायलोके–
चरित्रंवदाम्यत्रकिञ्चित्प्रसिद्धम् ।
तवप्रेरणैवाभवद्हेतुभूता–
मदीयेहृदब्जेमहादेविदुर्गे ॥४॥

ankurnagpal108@gmail.com

॥ पाठविधि ॥

साधन स्नान करके पवित्र हो आसन शुद्धि की क्रिया सम्पन्न करके पूर्वाभिमुख हो शुद्ध आसान पर बैठे साथ में शुद्ध जल (गङ्गाजल आदि) पूजन सामग्री और श्री तन्त्रदुर्गा सप्तशती की पुस्तक रक्खे। मस्तक में अपने रुचि के अनुसार भस्म, चन्दन, रोली अथवा सेंदुर लगाले। शिखा बांध ले। तत्व शुद्धि के लिए चार बार आचमन करे। तत्पश्चात् प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करे। कुश की पवित्री धारन करके हाथ में लाल फूल, चावल और जल लेकर निम्नाङ्कित रूप से संकल्प करे।

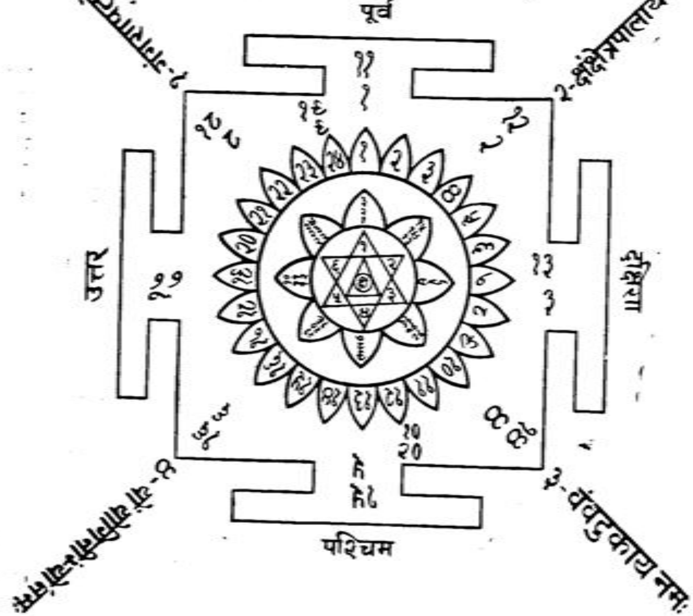
ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः । ॐ नमः परमात्मने, श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्राह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धेश्रीश्वेतवाराहकल्पेवैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशति–तमेकलियुगेकलिप्रथमचरणेजम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे अमुकायने अमुकमाङ्गल्यप्रदे मासानामुत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवा–सरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकरा–शिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभक–रणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्तकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माहं ममात्मनः सपुत्रवान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत

राजकृतादि सर्वविधपीडानिवृत्तिपूर्वकन्नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टि धनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति सर्वाभीष्ट फलावाप्ति धर्मार्थ काममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धि द्वारा श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताप्रीत्यर्थं तन्त्रोक्तरात्रिसूक्त पाठन्यास विधि सहित नवार्णजप तान्त्रिकसप्तशती न्यासध्यान पूर्वकञ्च "ॐ ऐं श्रींनमः ॐ ऐं ह्रीं नमः। इत्याद्यारभ्य ॐ ऐं ओंनमः इत्यन्तन्तन्त्ररूपेण परिणतं श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती पाठं तदन्ते च न्यास विधिसहित नवार्णजपतान्त्रिक सप्तशती न्यासध्यान पूर्वकं तान्त्रिक देवीसूक्त पाठञ्च करिष्ये।

(यदि दूसरे से पाठादि कर वाना हो तो कारयिष्ये, कहना चाहिये)

इस प्रकार सङ्कल्प करके भगवती श्री दुर्गादेवी का ध्यान करते हुये पञ्चोपचार विधि से पुस्तक की पूजा करे। यदि ज्ञात होतो योनिमुद्रा प्रदर्शित करके भगवती को प्रणाम करे। पश्चात् नवार्णमन्त्र से पीठ में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराज मान करे। पश्चात् यदि ज्ञात हो अन्तर्मातृ का बहिर्मातृका आदिन्यास करे अन्यथा नहीं। पश्चात् भगवती का ध्यान व पूजन आगे लिखित श्री दुर्गा पूजायन्त्र में करें।

श्रीदुर्गादेवीपूजनयन्त्रम्



॥ यन्त्रविवरणम् ॥

त्रिकोणे–३। त्रिकोणाद्बाह्ये–१०। षट्कोणेषु–६। अष्टपत्रेषु २४। चतुर्विंशतिदलेषु–२४। तद्यथा–१–विष्णुमाया। २–चेतना। ३–बुद्धि। ४–निद्रा। ५–क्षुधा। ६–छाया। ७–शक्ति। ८–तृष्णा। ९–क्षान्ति। १०–जाति। ११–लज्जा। १२–शान्ति १३–श्रद्धा। १४–कान्ति। १५–लक्ष्मी। १६–धृति। १७–वृत्ति। १८–स्मृति। १९–दया। २०–तुष्टि। २१–पुष्टि। २२–मातृ। २३–भ्रान्ति २४–चिति। चतुर्विंशतिदलेभ्योबाह्ये १०–ततोदिक्पालायुधवाहनादि २०। ततोभूपुरबाह्ये ४।

"यन्त्रस्थदेवता परिचय:"

१– त्रिकोणेबिन्दुमध्येह्रीं
२– त्रिकोणमध्ये ॐ ऐंह्रींक्लींचामुण्डायै विच्चे ।
ॐ मं मंगलायैनमः ।
१०– त्रिकोणाद्वाह्ये-पू० कोणे–१–ॐ ब्रह्मणेनमः
ॐ सरस्वत्यैनमः ।
नै०कोणे–३– ॐ विष्णवेनमः ४– ॐ श्रियैनमः ।
वा०कोणे-५– ॐ शिवायनमः ६– ॐ उमायैनमः ।
दक्षिणे – ७– ॐ मं महिषायनमः ८– कां कालायनमः ।
उत्तरे – ९– ॐ सिं सिंहायनमः १०-ॐ मृं मृत्यवेनमः ।
६– षट्कोणमध्ये पूर्वादिक्रमेण–
१–ॐ नं नन्दजायैनमः २– ॐ रक्तदन्तिकायैनमः
३–ॐ शाकम्भर्य्यैनमः ४– ॐ दुं दुर्गायैनमः ।
५–ॐ भींभींमायैनमः ६– ॐ भ्रां भ्रामर्य्यैनमः ।
केचिन्मतेऽत्रैवमहिषादीनांस्थापनादि
दक्षिणे–ॐ मं महिषायनमः ॐ कां कालायनमः।
उत्तरे–ॐ सिं सिंहायनमः ॐ मृं मृत्यवेनमः ।
२४–अष्टपत्रेषु पूर्वादिक्रमेण–
पूर्वे– ॐ जं जयायैनमः । ॐ वां ब्राह्म्यैनमः । ॐ अं असिताङ्गभैरवायनमः

ankurnagpal108@gmail.com

दक्षिणे–ॐ अं अजितायैनमः । ॐ मां माहेश्वर्य्यैनमः
ॐ चं चण्डभैरवायनमः ।
पश्चिमे-ॐ निं नित्यायैनमः । ॐ कौं कौमार्य्यै नमः।
ॐ उं उन्मत्तभैरवायनमः।
उत्तरे– ॐ विजयायैनमः । ॐ वैं वैष्णव्यैनमः । ॐ रुं रुरुभैरवायनमः ।
अ०कोणे-ॐ द्रों द्रोह्यैनमः । ॐ वां वाराह्यैनमः । ॐ भीं भीषणभैरवायनमः ।
नै०कोणे-ॐ अं अघोरायैनमः । ॐ नां नारसिंह्यैनमः ।
ॐ सं संहारभैरवायनमः ।
वा०कोणे-ॐ विलाशिन्यैनमः । ॐ अं अपराजितायैनमः ।
ॐ कं कपालभैरवायनमः ।
ई०कोणे-ॐ अं अपराजितायैनमः । ॐ चां चामुण्डायैनमः ।
ॐ क्रों क्रोधभैरवायनमः ।
२४–ततश्चतुर्विंशतिदलेषु पूर्वादिक्रमेण–
ॐ विं विष्णुमायायैनमः ॥१॥ ॐ चें चेतनायैनमः ॥२॥
ॐ बुं बुद्ध्यैनमः ॥३॥ ॐ निं निद्रायैनमः ॥४॥
ॐ क्षुं क्षुधायैनमः ॥५॥ ॐ छां छायायैनमः ॥६॥ ॐ शं शक्त्यैनमः ॥७॥ ॐ तृं तृष्णायैनमः ॥८॥ ॐ क्षां क्षान्त्यैनमः ॥९॥ ॐ जां जात्यैनमः ॥१०॥ ॐ लंलज्जायै-

नमः ॥११॥ ॐ शां शान्त्यैनमः ॥१२॥ ॐ श्रं श्रद्धायै-नमः ॥१३॥ ॐ कां कान्त्यैनमः ॥१४॥ ॐ लं लक्ष्म्यैनमः ॥१५॥ ॐ धृं धृत्यैनमः ॥१६॥ ॐ स्मृं स्मृत्यैनमः ॥१७॥ ॐ वृं वृंत्यैनमः ॥१८॥ ॐ तुं तुष्ट्यैनमः ॥१९॥ ॐ पुं पुष्टयैनमः ॥२०॥ ॐ दं दयायैनमः ॥२१॥ ॐ मां मात्रे-नमः ॥२२॥ ॐ भ्रां भ्रान्त्यैनमः ॥२३॥ ॐ चिं चित्यैनमः ॥२४॥

१०—ततश्चतुर्विंशतिदलेभ्योवाह्ये—

लं इन्द्रायनमः ॥१॥ रं अग्नयेनमः ॥२२। मं यमायनमः ॥३॥ क्षं निर्ऋतयेनमः ॥४॥ वं वरुणायनमः ॥५॥ यंवायवे-नमः ॥६॥ संसोमायनमः ॥७॥ ईं ईशानायनमः ॥८॥ ईशान-पूर्वयोर्मध्ये-अं ब्राह्मणेनमः ॥९॥ पश्चिमनिर्ऋतयोर्मध्येह्रीं-अनन्तायनमः ॥१०॥

१०—ततोदिक्पालायुधावाहनादि-यथा-

ॐ वं वज्रायनमः ॥१॥ ॐ शंशक्त्येनमः ॥२॥ ॐ दं दण्डायनमः ॥३॥ ॐ खं खड्गायनमः ॥४॥ ॐ पाँ पाशाय-नमः ॥५॥ ॐ अं अंकुशायनमः ॥६॥ ॐ गंगदायैनमः ॥७॥ ॐ शं त्रिशूलायनमः ॥८॥ ॐ पं पद्मायनमः ॥९॥ ॐ चं चक्रायनमः ॥१०॥

४—ततोभूपुरवाह्ये चतुष्कोणेषु—ऐशान्याम्—

गं गणपतयेनमः ॥१॥ आग्नेय्याम्-क्षं क्षेत्रपालायनमः ॥२॥

नैर्ऋत्याम्-वं वटुकायनमः ॥३॥ वायव्ये—यों योगिनीभ्यो नमः ॥४॥

॥ इतिपूर्वोक्तप्रकारेणसर्वान्देवानावाह्यपूजयेत् ॥

यन्त्रपूजन सङ्केत

यन्त्र में लिखे अङ्कानुसार देवताओं का आवाहनादि पूजनविधान विधिवत् कर के यन्त्र पर घट स्थान आदि कार्यक्रम करे। पश्चात् श्री दुर्गादेवी की मूर्ति स्वर्ण आदि किसी भी धातु की हो उसमें प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त सभी संस्कार करके षोडशोपचार पूजन करे। अथवा चित्ररख करके पूजनादि करके भी तन्त्रमयी अर्थात् बीजमयी श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशतीका पाठ करे ॥ पाठारम्भ से पूर्व तन्त्ररूप-रात्रि सूक्त का पाठ-पश्चात् नवार्णमन्त्रजप न्यासदि सहित तथा सप्तशती का भी न्यासन्ध्यान आवश्यक है।

॥ तन्त्ररूपं रात्रिसूक्तम् ॥ ७ ॥

ॐऐं ब्लूं नमः ॥ १ ॥ ॐऐं ठांनमः ॥ २ ॥ ॐऐं ह्रीं नमः ॥ ३ ॥ ॐऐं स्रांनमः ॥ ४ ॥ ॐऐं स्लूं नमः ॥ ५ ॥ ॐऐं क्रैंनमः ॥ ६ ॥ ॐऐं त्रां नमः ॥ ७ ॥ ॐऐं फ्रां नमः ॥ ८ ॥ ॐऐं जींनमः ॥ ९ ॥ ॐऐं लूंनमः ॥ १० ॥ ॐऐं स्लूं नमः ॥ ११ ॥ ॐऐं नों नमः ॥ १२ ॥ ॐऐं स्त्रीं नमः ॥ १३ ॥ ॐऐं प्रूंनमः ॥ १४ ॥ ॐऐं स्रूं नमः ॥ १५ ॥ ॐऐ जां नमः ॥ १६ ॥ ॐऐ वौं नमः ॥ १७ ॥ ॐ ऐं ओं नमः ॥ १८ ॥

॥ अथ नवार्ण विधि ॥

इस प्रकार तन्त्र रूप में परिणत रात्रिसूक्त का पाठ करने के पश्चात् निम्नाङ्कित रूप से नवार्णमन्त्र के विनियोग न्यास और ध्यान करे ॥

श्रीगणपतिर्जयति । ॐ नवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवता, ऐं बीजम्, ह्रींशक्तिः, क्लींकीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतोप्रीत्यर्थेजपे विनियोगः । पूर्वोक्त पढ़कर जल गिरावे ।

निम्नलिखित न्यास वाक्यों से एक एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः शिर-मुख-हृदय गुदा-दोनों चरण और नाभि इस अङ्गों का स्पर्श करे ।

॥ ऋष्यादिन्यासः ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकाली महालक्ष्मो महासतरस्वती देवताभ्योनमः, हृदि । ऐं बीजायनमः गुह्ये । ह्रींशक्तयेनमः, पादयोः । क्लींकीलकाय नमः, नाभौ । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे, इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करे ।

॥ करन्यासः ॥

करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठ भाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापत) किया जाता है। इसी प्रकार अङ्गन्यास में

हृदयादि अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना होती है । मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान् लानकर उन उन अङ्गों का नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दत किया जाता है । ऐसा करने से पाठ या जप करने वाला स्वयं मन्त्रमय होकर मन्त्र देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता हैं । उसके बाहर भीतर की शुद्धि होती है । दिव्यबल प्राप्त होता है । और साधना निर्विघ्नता पूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है ।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः (दोनो हाथों की तर्जनी अँगुलियों से दोनों अँगूठों का स्पर्श)

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यान्नमः (दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यांनमः (अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यांनमः (अनामिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यांनमः (कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चासुण्डायै बिच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)

॥ हृदयादिन्यासः ॥

इसमें दाहिने हाथ की पाँचो अँगुलियों से हृदय आदि अङ्गों का स्पर्श किया जाता है ।

ॐ ऐं हृदयायनमः (दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसेस्वाहा (सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायैवषट् (शिखा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचायहुम् (दाहिने हाथ की अँगुलियों से बांये कंधै का और बांये हाथ की अँगुलियों से दाहिने कंधे का साथ ही स्पर्श)

ॐ विच्चे नेत्रत्रयायवौषट् (दाहिने हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे अस्त्रायफट् (यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से वांयी ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले आये और तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताल बजावे।

॥ अक्षरन्यासः ॥

निम्नाङ्कित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अँगुलियों से स्पर्श करे।

ॐ ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः नामनेत्रे। ॐ चां नमः दक्षिण कर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ यैं नमः वामनासापुटे विं नमः मुखे। ॐ च्चे नमः गुह्ये।

इस प्रकार न्यास करके ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इस मन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा) सिर से लेकर पैर तक के सब अङ्गों का स्पर्श करे। बाद में प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुय न्यास करे।

॥ दिङ्न्यासः ॥

ॐ ऐं प्राच्यैनमः। ॐ ऐं आग्नेय्यैनमः दक्षि ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यैनमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यैनमः। ॐ क्लीं वायव्यैनमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यैनमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यैनमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायैनमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चेभूम्यैनमः

॥ ध्यानम् ॥

खड्गञ्चापगदेषु चापपरिखाञ्छूलम्भुशुण्डीं शिरः
शङ्खंसंदधतीङ्करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवैमहाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौकमलजो हन्तुम्मधुङ्कैटभम्॥ १॥
अक्षस्रक्परशुङ्गदेषुकुलिशं पद्मन्धनुःकुण्डिकां
दण्डंशक्तिमसिञ्चचर्मजलजंघण्टांसुराभाजनम्।

शूलंपाशसुदर्शनेचदधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्तिाम् ॥ २ ॥
घण्टाशूलहलानिशङ्खमुसले चक्रंधनु:सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीङ् घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूताम्महा,
पूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम ॥ ३ ॥

पश्चात्–ऐं ह्रीं अक्षमालिकायैनमः, इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करे।

ॐ मां मालेमहामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मांन्मेसिद्धिदाभव ॥ १ ॥
ॐ अविन्घंकुरुमाले त्वंगृह्णामिदक्षिणे:करे ।
जपकालेचसिद्ध्यर्थं प्रसीदममसिद्धये ॥ २ ॥

इसके पश्चात्--"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस मन्त्र का १०८ बार जप करे।

पश्चात्–

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वंगृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतुमे देवित्वत्प्रसादान्महेश्यरि ॥

इस श्लोक को पढ़कर देवी के वाम हस्त में जपनिवेदन करे।

॥ इतिनवार्णविधिः ॥

नवार्ण विधि के अनुसार जप करने के बाद सप्तशती के विनियोग न्यास और ध्यान करने चाहिये। पूर्वाङ्कित क्रमानुसार न्यासादि करे।

प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवताः, गायत्र्युष्णि-गनुष्टुभश्छन्दासिनन्दांशाकम्भरीभीमः शक्तयः, रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्वानि, ऋग्यजुःसामवेदाध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती प्रात्यर्थेंजपे विनियोग :

खड्गनीशूलिनीघोरागदिनी चक्रिणीतथा ।
शङ्खिनी चापिनी वाणुभुशुण्डी परिघायुधा ॥
ॐ ऐं स्लूं नमः अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ।
ॐ शूलनपाहि नो देविपाहिखड्गेनचाम्बिके ।
घण्टा स्वनेननः पाहिचापज्यानिस्वनेनच ॥
ॐ ऐं क्रेंनमः । (तर्जनीभ्यान्नमः ।
प्राच्यांरक्षप्रतीच्याञ्च चण्डिकेरक्षदक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥
ॐ ऐ क्रीं नमः । मध्यमाभ्यान्नमः ।
ॐसौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्येविचरन्ति ते ।
यानि चात्यर्थघोराणितैरक्षास्मांस्तथाभुवम् ॥
ॐ ऐं म्लूं नमः । अनामिकाभ्यान्नमः ।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानिचास्त्राणितेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान्रक्ष सर्वतः ।
ॐ ऐं श्रैं नमः । कनिष्ठिकाभ्यान्नमः ।

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नोदेवि दुर्गे देविनमोस्तुते ॥
ॐ ऐं श्रूं नमः । करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ॥
ॐ ऐंस्लंनमः खड्गिनी शूलिनी घोरा०–हृदयायनमः ।
ॐ ऐं फ्रंनमः ।–शूलेनपाहिनोदेवि०–शिरसेस्वाहा ।
ॐ ऐं क्रीं नमः प्राच्यांरक्षप्रतोच्यांच- शिखायैवषट् ।
ॐ ऐंम्लू नमः । सौम्यानियामिरूपाणि०–कवचायहुम् ।
ॐ ऐं ध्रंनमः । खड्गशूलगदादीनि०–नेत्रत्रयायवौषट् ।
ॐ ऐं श्रूंनमः । सर्वस्वरूपेसर्वेशे०-अस्त्रायफट्

॥ ध्यानम् ॥

विद्युद्दामसमप्रभाम्मृगपतिस्कन्धस्थिताम्भीषणां
कन्याभिःकरवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापंगुणंतर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकांशशिधरान्दुर्गान्त्रिनेत्राम्भजे ॥

अर्थ— जिनके अंगों की शोभा बिजली के समान हैं, सिंह की सवारी पर बैठीं हुई भयङ्कर प्रतीत होती हैं, हाथों में तलवार और ढाल लिये ऐसी अनेक कन्यायें जिनकी सेवा में खड़ी हैं, जो अपने हाथों में चक्र-गदा-तलवार-ढाल-वाण-धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हैं जिनका स्वरूप अग्निमय है, जो अपने माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण किये, उन तीन नेत्रवाली दुर्गा का मैं भजन करता हूँ । इस प्रकार भगवती दुर्गा देवी का ध्यान करके श्री तन्त्र दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ करें ।

ankurnagpal108@gmail.com

सङ्केत–कामनानुसार मन्त्र वीज जपने से सकल कामनाप्रद निश्चित हैं । एवमेव-सर्वत्र अति प्रचलित दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुटित करने से शीघ्र सिद्ध प्रद होते हैं ।

॥ अथश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशतीपाठारम्भः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ अथ प्रथमोध्यायः ॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे ।१०८। ओं बीजत्रयायै-विद्महे तत्प्रधानायैधीमहि । तन्नः शक्तिः प्राचोदयात् ।

ॐ श्रीं नमः १ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २ । ॐ ऐं क्लीं नमः ३ । ॐ ऐं श्रीं नमः ४ । ॐ ऐं प्रीं नमः ५ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ७ । ॐ ऐं सौं नमः ८ । ॐ ऐं प्रें नमः ९ । ॐ ऐं म्रीं नमः १० । ऐं ह्ल्रीं नमः ११ । ॐ ऐं म्लीं नमः १२ । ॐ ऐं स्त्रीं नमः १३ । ॐ ऐं क्रां नमः १४ । ॐ ऐं ह्स्लीं नमः १५ । ॐ ऐं क्रीं नमः १६ । ॐ ऐं चां नमः १७ । ॐ में नमः १८ । ॐ ऐं क्रीं नमः १९ । ॐ ऐं वैं नमः २० । ॐ ऐं ह्रौं नमः २१ । ॐ ऐं यु नमः २२ । ॐ ऐं जु नमः २३ । ॐ ऐं हं मनः २४ । ॐ ऐं शं नमः २५ । ॐ ऐं रौं नमः २६ । ॐ ऐं यं नमः २७ । ॐ ऐं विं नमः २८ । ॐ ऐं वें नमः २९ । ॐ ऐं चें नमः ३० । ॐ ऐं ह्रीं

नमः ३१ । ॐ ऐं क्रं नमः ३२ । ॐ ऐं सं नमः । ३३ ॐ ऐं कं नमः ३४ । ॐ ऐं श्रीं नमः ३५ । ॐ ऐं त्रौं नमः ३६ । ॐ ऐं स्त्रां नमः ३७ । ॐ ऐं ज्यैं नमः ३८ । ॐ ऐं रौं नमः ३९ । ॐ ऐं द्रां नमः । ॐ ऐं द्रों नमः ४१ । ॐ ऐं ह्लां नमः ४२ । ॐ ऐं द्रूं नमः ४३ । ॐ ऐं शां नमः ४४ । ॐ ऐं मीं नमः ४५ । ॐ ऐं श्रौं नमः ४६ । ॐ ऐं जुं नमः ४७ । ॐ ऐं हल्लूं नमः ४८ । ॐ ऐं श्रूं नमः ४९ । ॐ ऐं प्रीं नमः ५० । ॐ ऐं रं नमः ५१ । ॐ ऐं वं नमः ५२ । ॐ ऐं ब्रीं नमः ५३ । ॐ ऐं ब्लं नमः ५४ । ॐ ऐं स्त्रौं नमः ५५ । ॐ ऐं ल्वां नमः ५६ । ॐ ऐं लूं नमः ५७ । ॐ ऐं सां नमः ५८ । ॐ ऐं रौं नमः ५९ । ॐ ऐं स्हौं नमः ६० । ॐ ऐं कुं नमः ६१ । ॐ ऐं शौं नमः ६२ । ॐ ऐं श्रौं नमः ६३ । ॐ ऐं वं नमः ६४ । ॐ ऐं त्रूं नमः ६५ । ॐ ऐं क्रौं नमः ६६ । ॐ ऐं क्लं नमः ६७ । ॐ ऐं क्लीं नमः ६८ । ॐ ऐं श्रीं नमः ६९ । ॐ ऐं ब्लूं नमः ७० । ॐ ऐं ठां नमः ७१ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ७२ । ॐ ऐं स्त्रां नमः ७३ । ॐ ऐं स्लूं नमः ७४ । ॐ ऐं क्रैं नमः ७५ । ॐ ऐं त्रां नमः ७६ । ॐ ऐं फ्रां नमः ७७ । ॐ ऐं जीं नमः ७८ । ॐ ऐं लूं नमः ७९ । ॐ ऐं स्लूं नमः ८० । ॐ ऐं नों नमः ८१ । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ८२ । ॐ ऐं प्रूं नमः ८३ । सूं नमः ८४ ।

ॐ ऐं ज्रां नमः ८५ । ॐ ऐं वौं नमः ८६ । ॐ ऐं ओं नमः ८७ । ॐ ऐं श्रौं नमः ८८ । ॐ ऐं ऋं नमः ८९ । ॐ ऐं रूं नमः ९० । ॐ ऐं क्लीं नमः ९१ । ॐ ऐं दुं नमः ९२ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ९३ । ॐ ऐं गूं नमः ९४ । ॐ ऐं लां नमः ९५ । ॐ ऐं ह्लां नमः ९६ । ॐ ऐं गं नमः ९७ । ॐ ऐं ऐं नमः ९८ । ॐ ऐं श्रौं नमः ९९ । ॐ जूं नमः १०० । ॐ ऐं डें नमः १०१ । ॐ ऐं श्रौं नमः १०२ । ॐ छ्रां नमः १०३ । ॐ ऐं क्लीं नमः १०४ ।

॥ इति प्रथमोध्यायः ॥

॥ अथ द्वितीयोध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ऐं श्रीं नमः २ । ॐ ऐंह्सूं नमः ३ । ऐं हौं नमः ४ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ५ । ॐ ऐं बं नमः ६ । ॐ ऐं क्लीं नमः ७ । ॐ ऐं चां नमः ८ । ॐ ऐं मुं नमः ९ । ॐ ऐं डां नमः १० । ॐ ऐं यैं नमः ११ । ॐ ऐं विं नमः १२ । ॐ ऐं च्चें नमः १३ । ॐ ऐं ईं नमः १४ । ऐं सौं नमः १५ । ॐ ऐं व्रां नमः १६ । ॐ ऐं त्रौं नमः १७ । ॐ ऐं लूं नमः १८ । ॐ ऐं वं नमः १९ । ॐ ऐं ह्लां नमः २० । ॐ ऐं क्रीं नमः २१ । ॐ ऐं सौं नमः २२ । ॐ ऐं यं नमः २३ । ॐ ऐं ऐं नमः २४ । ॐ

ऐं मूं नमः २५ । ॐ ऐं सः नमः २६ । ॐ ऐं हं नमः २७ । ॐ ऐं सं नमः २८ । ॐ ऐं सौं नमः २९ । ॐ ऐं शं नमः ३० । ॐ ऐं हं नमः ३१ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ३२ । ॐ ऐं म्लीं नमः ३३ । ॐ यूं नमः ३४ । ॐ ऐं त्रूं नमः । ॐ ऐं स्रौं नमः ३६ । ॐ ऐं आं नमः ३७ । ॐ ऐ प्रें नमः ३८ : ॐ ऐं शं नमः ३९ । ॐऐं ह्रां नमः ४० ॐ ऐं स्मूं नमः ४१ ॐ ऐं ऊं नमः ४२ । ॐ ऐं गूं नमः ४३ । ॐ ऐं व्यं नमः ४४ । ॐ ऐं ह्ल नमः ४५ । ॐ ऐ भैं ममः ४६ । ॐ ऐं ह्लां नमः ४७ । ॐ क्रूं नमः ४८ । ॐ ऐं मूं नमः ४९ । ॐ ऐंल्रीं नमः ॐ ऐं श्रां नमः ५१ । ॐ ऐं द्रूं नमः ५२ । ॐ ऐं ह्लूं नमः ५३ । ॐ ऐं ह् सौं नमः ५४ । ॐ ऐं क्रां नमः ५५ । ॐ ऐं स्हौं नमः ५६ । ॐ ऐं म्लूं नमः ५७ । ॐ ऐं श्रीं नमः ५८ । ॐ ऐं गैं नमः ५९ । ॐ ऐं क्रीं नमः ६० । ॐ ऐं त्रीं नमः ६१ । ॐ ऐं क्सीं नमा : ६२ । ॐ ऐं फ्रों नमः ६३ । ॐ ऐ फ्रें नमः ६४ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ६५ । ॐ ऐं क्ष्स्रीं नमः ६६ । ॐ ऐं क्ष्म्रींनमः ६७ । ॐ ऐं रौं नमः ६८ । ॐ ऐं ङु नमः ६९ ।

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ तृतीयोध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं क्लीं नमः २ । ॐ ऐं सां नमः ३ । ॐ ऐं त्रों नमः ४ । ॐ ऐं प्रूं नमः ५ । ॐ ऐं ग्लौं नमः ६ । ॐ ऐं क्रौं नमः ७ । ॐ ऐं व्रीं नमः ८ । ॐ ऐं स्लीं नमः ९ । ॐ ऐं ह्रीं नमः १० । ॐ ऐं हौं नमः ११ । ॐ ऐं श्रां नमः १२ । ॐ ऐं ग्रीं नमः १३ । ॐ ऐं क्रूं नमः १४ । ॐ ऐं क्रीं नमः १५ । ॐ ऐं यां नमः १६ । ॐ ऐं द्लूं नमः १७ । ॐ ऐं द्रूं नमः १८ । ॐ ऐं क्षं नमः १९ । ॐ ऐं ओं नमः २० । ॐ ऐं क्रौं समः २१ । ॐ ऐं क्ष्म्क्लरीं नमः २२ । ॐ ऐं वां नमः २३ । ॐ ऐं श्रूं नमः २४ । ॐ ऐं ग्लूं नमः २५ । ॐ ऐं ल्रीं नमः २६ । ॐ ऐं प्रें नमः २७ । ॐ ऐं हूं नमः २८ । ॐ ऐं ह्रौं नमः २९ । ॐ ऐं दें नमः ३० । ॐ ऐं नूं नमः ३१ । ॐ ऐं आं नमः ३२ । ॐ ऐं फ्रां नमः ३३ । ॐ ऐं प्रीं नमः ३४ । ॐ ऐं दं नमः ३५ । ॐ ऐं फ्रीं नमः ३६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ३७ । ॐ ऐं गूं नमः ३८ । ॐ ऐं श्रौ नमः ३९ । ॐ ऐं सां नमः ४० । ॐ ऐं श्रीं नमः ४१ । ॐ ऐं जुं नमः ४२ । ॐ ऐं हं नमः ४३ । ॐ ऐं सं नमः ४४ ।

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं सौं नमः २। ॐ ऐं दीं नमः ३। ॐ ऐं प्रें नमः ४। ॐ ऐं यां नमः ५। ॐ ऐं रूं नमः ६। ॐ ऐं मं नमः ७। ॐ ऐं सूं नमः ८। ॐ ऐं श्रां नमः ९। ॐ ऐं औं नमः १०। ॐ ऐं लूं नमः ११। ॐ ऐ डूं नमः १२। ॐ ऐ जूं नमः १३। ॐ ऐं धूं नमः १४। ॐ ऐं त्रें नमः १५। ॐ ऐं ह्लीं नमः १६। ॐ ऐं श्रीं नमः १७। ॐ ऐं ईं नमः १८। ॐ ऐं ह्लां नमः १९। ॐ ऐं ह्ल्रूं नमः २०। ॐ ऐं क्लूं नमः २१। ॐ ऐं क्रां नमः २२। ॐ ऐं ल्लूं नमः २३। ॐ ऐं फ्रें नमः २४। ॐ ऐं क्रीं नमः २५। ॐ ऐं म्लूं मनः २६। ॐ ऐं घ्रें नमः २७। ॐ ऐं श्रौं नमः २८। ॐ ऐं ह्लौं नमः २९। ॐ ऐं व्रीं नमः ३०। ॐ ऐं ह्लीं नमः ३१। ॐ ऐं त्रौं नमः ३२। ॐ ऐं ह्ल्लौं नमः ३३। ॐ ऐं गीं नमः ३४। ॐ ऐं यूं नमः ३५। ॐ ऐं ह्लीं नमः ३६। ॐ ऐं ह्लूं नमः ३७। ॐ ऐं श्रौं नमः ३८। ॐ ऐं ओं नमः ३९। ॐ ऐं अं नमः ४०। ॐ ऐं म्हौं नमः ४१। ॐ ऐं प्रीं नमः ४२।

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ अथ पंचमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं प्रीं नमः २। ॐ ऐं ओं नमः ३। ॐ ऐं ह्रीं नमः ४। ॐ ऐं ल्रीं नमः ५। ॐ ऐं त्रों नमः ६। ॐ ऐं क्रौं नमः ७। ॐ ऐं ह्सौं नमः ८। ॐ ऐं ह्रीं नमः ९। ॐ ऐं श्रीं नमः १०। ॐ ऐं हूं नमः ११। ॐ ऐं क्लीं नमः १२। ॐ ऐं रौं नमः १३। ॐ ऐं स्त्रीं नमः १४। ॐ ऐं म्लीं नमः १५। ॐ ऐं प्लूं नमः १६। ॐ ऐं स्हौं नमः १७। ॐ ऐं स्त्रीं नमः १८। ॐ ऐं ग्लूं नमः १९। ॐ ऐं व्रीं नमः २०। ॐ ऐं सौं नमः २१। ॐ ऐं लूं नमः २२। ॐ ऐं ल्लूं नमः २३। ॐ ऐं द्रां नमः २४। ॐ ऐं क्सां नमः २५। ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः २६। ॐ ऐं ग्लौं नमः २७। ॐ ऐं स्कं नमः २८। ॐ ऐं त्रूं नमः २९। ॐ ऐं स्क्लूं नमः ३०। ॐ ऐं क्रौं नमः ३१। ॐ ऐं छ्रीं नमः ३२। ॐ ऐं म्लूं नमः ३३। ॐ ऐं क्लूं नमः ३४। ॐ ऐं शां नमः ३५। ॐ ऐं ल्हीं नमः ३६। ॐ ऐं स्त्रूं नमः ३७। ॐ ऐं ल्लीं नमः ३८। ॐ ऐं लीं नमः ३९। ॐ ऐं सं नमः ४०। ॐ ऐं लूं नमः ४१। ॐ ऐं ह्सूं नमः ४२। ॐ ऐं श्रूं नमः ४३। ॐ ऐं जूं नमः ४४। ॐ ऐं ह्स्ल्रीं नमः ४५। ॐ ऐं स्कीं नमः ४६। ॐ ऐं क्लां नमः ४७। ॐ ऐं श्रूं नमः ४८। ॐ ऐं हं नमः ४९। ॐ ऐं ह्लीं नमः ५०। ॐ ऐं क्स्रूं नमः

५१ । ॐ ऐं द्रौं नमः ५२ । ॐ ऐं क्लूं नमः ५३ । ॐ ऐं गां नमः ५४ । ॐ ऐं सं नमः ५५ । ॐ ऐं ल्स्रौं नमः ५६ । ॐ ऐं फ्रीं नमः ५७ । ॐ ऐं स्लां नमः ५८ । ॐ ऐं ल्लूं नमः ५९ । ॐ ऐं फें नमः ६० । ॐ ऐं ओं नमः ६१ । ॐ ऐं स्म्लीं नमः ६२ । ॐ ऐं ह्लां नमः ६३ । ॐ ऐं ॐ नमः ६४ । ॐ ऐं ह्लूं नमः ६५ । ॐ ऐं हूं नमः ६६ । ॐ ऐं नं नमः ६७ । ॐ ऐं स्रां नमः ६८ । ॐ ऐं वं नमः ६९ । ॐ ऐं मं नमः ७० । ॐ ऐं म्क्लीं नमः ७१ । ॐ ऐं शां नमः ७२ । ॐ ऐं लं नमः ७३ । ॐ ऐं भैं नमः ७४ । ॐ ऐं ल्लूं नमः ७५ । ॐ ऐं हौं नमः ७६ । ॐ ऐं ईं नमः ७७ । ॐ ऐं चें नमः ७८ । ॐ ऐं ल्क्रीं नमः ७९ । ॐ ऐं ह्लरीं नमः ८० । ॐ ऐं क्ष्म्लरीं नमः ८१ । ॐ ऐं पूं नमः ८२ । ॐ ऐं श्रौं नमः ८३ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ८४ । ॐ ऐं भ्रूं नमः ८५ । ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः ८६ । ॐ ऐं आं नमः ८७ । ॐ ऐं क्रूं नमः ८८ । ॐ ऐं त्रूं नमः ८९ । ॐ ऐं डुं नमः ९० । ॐ ऐं जां नमः ९१ । ॐ ऐं ह्लरूं नमः ९२ । ॐ ऐं फ्रौं नमः ९३ । ॐ ऐं क्रौं नमः ९४ । ॐ ऐं किं नमः ९५ । ॐ ऐं ग्लूं तमः ९६ । ॐ छ्रूं क्लीं नमः ९७ । ॐ ऐं रं नमः ९८ । ॐ ऐं क्सैं नमः ९९ । ॐ ऐं स्हुं नमः १०० । ॐ ऐं श्रौं नमः १०१ । ॐ ऐं श्श्रीं नमः १०२ । ॐ ऐं ओं नमः १०३ । ॐ ऐं लूं नमः १०४ । ॐ ऐं ल्हूं

ankurnagpal108@gmail.com

नमः १०५ । ॐ ऐं ल्लूं नमः १०६ । ॐ ऐं स्क्रीं नमः १०७ । ॐ ऐं स्स्रौं नमः १०८ । ॐ ऐं स्भ्रूं नमः १०९ । ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः ११० । ॐ ऐं व्रीं नमः १११ । ॐ ऐं सीं नमः ११२ । ॐ ऐं भूं नमः ११३ । ॐ ऐं लां नमः ११४ । ॐ ऐं श्रौं नमः ११५ । ॐ ऐं स्हैं नमः ११६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ११७ । ॐ ऐं श्रीं नमः ११८ । ॐ ऐं फ्रें नमः ११९ । ॐ ऐं रूं नमः १२० । ॐ ऐं च्छ्रूं नमः १२१ । ॐ ऐं ल्हूं नमः १२२ । ॐ ऐं कं नमः १२३ । ॐ ऐं द्रें नमः १२४ । ॐ ऐं श्रीं नमः १२५ । ॐ ऐं सां नमः १२६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः १२७ । ॐ ऐं ऐं नमः १२८ । ॐ ऐं स्क्लीं नमः १२९ ।

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं ओं नमः २ । ॐ ऐं त्रूं नमः ३ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ४ । ॐ ऐं क्रौं नमः ५ । ॐ ऐं श्रौं नमः ६ । ॐ ऐं त्रीं नमः ७ । ॐ ऐं क्लीं नमः ८ । ॐ ऐं प्रीं नमः ९ । ॐ ऐं ह्रीं नमः १० । ॐ ऐं ह्रौं नमः ११ । ॐ ऐं श्रौं नमः १२ । ॐ ऐं ऐं नमः १३ । ॐ ऐं ओं नमः १४ । ॐ ऐं श्रीं नमः १५ । ॐ ऐं क्रां नमः १६ । ॐ ऐं हूं नमः १७ । ॐ ऐं छ्रां नमाः १८ । ॐ ऐं क्ष्म्क्लरीं

नमः १९ । ॐ ऐं ल्लूं नमः २० । ॐ ऐं सौं नमः २१ । ॐ ऐं ह्लौं नमः २२ । ॐ ऐं क्रूं नमः २३ । ॐ ऐं सौं नमः २४ ।

॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं कूं नमः २ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ३ । ॐ ऐं ह्लं नमः ४ । ॐ ऐं मूं नमः ५ । ॐ ऐं त्रौं नमः ६ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ७ । ॐ ऐं ओं नमः ८ । ॐ ऐ ह्सू नमः ९ । ॐ ऐं क्लूं नमः १० । ॐ ऐं क्रें नमः ११ । ॐ ऐ नें नमः १२ । ॐ ऐं लूं नमः १३ । ॐ ऐं ह्स्लीं नमः १४ । ॐ ऐं प्लूं नमः १५ । ॐ ऐं शां नमः १६ । ॐ ऐं स्लूं नमः १७ । ॐ ऐं प्लीं नमः १८ । ॐ ऐं प्रें नमः १९ । ॐ ऐं अं नमः २० । ॐ ऐं औं नमः २१ । ॐ ऐं म्लरीं नमः २२ । ॐ ऐं श्रां नमः २३ । ॐ ऐं सौं नमः २४ । ॐ ऐं श्रौं नमः २५ । ॐ ऐं प्रीं नमः २६ । ॐ ऐं ह्स्व्रीं नमः २७ ।

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

ankurnagpal108@gmail.com

॥ अथाष्टमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं म्हल्रीं नमः २ । ॐ ऐं प्रूं नमः ३ । ॐ ऐं ऐं नमः ४ । ॐ ऐं क्रों नमः ५ । ॐ ऐं ईं नमः ६ । ॐ ऐं ऐं नमः ७ । ॐ ऐं ल्रीं नमः ८ । ॐ ऐं फ्रौं नमः ९ । ॐ ऐं म्लूं नमः १० । ॐ ऐं नों नमः ११ । ॐ ऐं हूं नमः १२ । ॐ ऐं फ्रौं मनः १३ । ॐ ऐं ग्लौं नमः १४ । ॐ ऐं स्मौं नमः १५ । ॐ ऐं सौं नमः १६ । ॐ ऐं श्रीं नमः १७ । ॐ ऐं स्हौं नमः १८ । ॐ ऐं ख्सें नमः १९ । ॐ ऐं क्ष्म्लीं नमः २० । ॐ ऐं ह्रां नमः २१ । ॐ ऐं वीं नमः २२ । ॐ ऐं लूं नमः २३ । ॐ ऐ ल्सीं नमः २४ । ॐ ऐं ब्लों नमः २५ । ॐ ऐ त्स्रों नमः २६ । ॐ ऐ ब्रूं नमः २७ । ॐ ऐं श्क्लीं नमः २८ । ॐ ऐं श्रूं नमः २९ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ३० । ॐ ऐ शीं नमः ३१ । ॐ ऐं क्लीं नमः ३२ । ॐ ऐं क्लौं नमः ३३ । ॐ ऐं तीं नमः ३४ । ॐ ऐं हूं नमः ३५ । ॐ ऐं क्लूं नमः ३६ । ॐ ऐं तां नमः ३७ । ॐ ऐं म्लूं नमः ३८ । ॐ ऐं हं नमः ३९ । ॐ ऐं स्लूं नमः ४० । ॐ ऐं औं नमः ४१ । ॐ ऐं ल्हों नमः ४२ । ॐ ऐं श्लरीं नमः ४३ । ॐ ऐं यां नमः ४४ । ॐ ऐं थ्लीं नमः ४५ । ॐ ऐं ल्हों नमः ४६ । ॐ ऐं ग्लौं नमः ४७ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ४८ । ॐ ऐं प्रां नमः ४९ । ॐ ऐं क्रीं नमः ५० । ॐ ऐं क्लीं नमः ५१ ।

ॐ ऐं न्स्लुं नमः ५२ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ५३ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ५४ । ॐ ऐं ह्लैं नमः ५५ । ॐ ऐं भ्रं नमः ५६ । ॐ ऐं सौं नमः ५७ । ॐ ऐं श्रीं नमः ५८ । ॐ ऐं प्सूं नमः ५९ । ॐ ऐं द्रौं नमः ६० । ॐ ऐं स्त्रां नमः ६१ । ॐ ऐं ह्स्लीं समः ६२ । ॐ ऐं स्ल्ह्रीं नमः ६३ ।

॥ इत्यष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं रौं नमः १ । ॐ ऐं क्लीं नमः २ । ॐ ऐं म्लौं नमः ३ । ॐ ऐं श्रौं नमः ४ । ॐ ऐं ग्लीं नमः ५ । ॐ ऐं ह्रौं नमः ६ । ॐ ऐं ह्सौं नमः ७ । ॐ ऐं ईं नमः ८ । ॐ ऐं ब्रूं नमः ९ । ॐ ऐं श्रां नमः १० । ॐ ऐं लूं नमः ११ । ॐ ऐं आं नमः १२ । ॐ ऐं श्रीं नमः १३ । ॐ ऐं क्रौं नमः १४ । ॐ ऐं प्रूं नमः १५ । ॐ ऐं क्लीं नमः १६ । ॐ ऐं भ्रूं नमः १७ । ॐ ऐं ह्रौं नमः १८ । ॐ ऐं क्रीं नमः १९ । ॐ ऐं म्लीं नमः २० । ॐ ऐं ग्लौं नमः २१ । ॐ ऐं ह्सूं नमः २२ । ॐ ऐं ल्पीं नमः २३ । ॐ ऐं ह्रौं नमः २४ । ॐ ऐं ह्स्रांनमः २५ । ॐ ऐं स्हौं नमः २६ । ॐ ऐं ल्लूं नमः २७ । ॐ ऐं क्स्लीं नमः २८ । ॐ ऐं श्रीं नमः २९ । ॐ ऐं स्तूं नमः ३० ।

ॐ ऐं च्रूं नमः ३१ । ॐ ऐं वीं नमः ३२ । ॐ क्ष्लूं नमः ३३ । ॐ ऐं श्लूं नमः ३४ । ॐ ऐं क्रूं तमः ३५ । ॐ ऐं क्रां नमः ३६ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ३७ । ॐ ऐं क्रां नमः ३८ । ॐ ऐं स्क्लीं नमः ३९ । ॐ ऐं सूं नमः ४० । ॐ ऐं फ्रूं नमः ४१ ।

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २ । ॐ ऐं ब्लूं नमः ३ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ४ । ॐ ऐं म्लूं नमः ५ । ॐ ऐं श्रौं नमः ६ । ॐ ऐं ह्रीं नमः ७ । ॐ ऐं ग्लीं नमः ८ । ॐ ऐं श्रौं नमः ९ । ॐ ऐं ध्रूं नमः १० । ॐ ऐं हुं नमः ११ । ॐ ऐं द्रौं नमः १२ । ॐ ऐं श्रीं नमः १३ । ॐ ऐं त्रूं नमः १४ । ॐ ऐं व्रूं नमः १५ । ॐ ऐं फ्रें नमः १६ । ॐ ऐं ह्रां नमः १७ । ॐ ऐं जुं नमः १८ । ॐ ऐं स्रौं नमः १९ । ॐ ऐं स्लूं नमः २० । ॐ ऐं प्रें नमः २१ । ॐ ऐं ह्स्वां नमः २२ । ॐ ऐं प्रीं नमः २३ । ॐ ऐं फ्रां नमः २४ । ॐ ऐं क्रीं नमः २५ । ॐ ऐं श्रीं नमः २६ । ॐ ऐं क्रां नमः २७ । ॐ ऐं सः नमः २८ । ॐ ऐं क्लीं नमः २९ । ॐ ऐं व्रें नमः ३० । ॐ ऐं ईं

नमः ३१। ॐ ऐं ज्स्ह्ल्रीं नमः ३२।

॥ इति दशमाऽध्यायः ॥

॥ अथ एकादशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं क्रूं नमः २। ॐ श्रीं नमः ३। ॐ ऐं ल्लीं नमः ४। ॐ ऐं प्रें नमः ५। ॐ ऐं सौं नमः ६। ॐ ऐं स्हौं नमः ७। ॐ ऐं श्रूं नमः ८। ॐ ऐं क्लीं नमः ९। ॐ ऐं स्क्लीं नमः १०। ॐ ऐं प्रीं नमः ११। ॐ ऐं ग्लौं नमः १२। ॐ ऐं ह्स्ह्लीं नमः १३। ॐ ऐं स्तौं नमः १४। ॐ ऐं लीं नमः १५। ॐ ऐं म्लीं नमः १६। ॐ ऐं स्तूं नमः १७। ॐ ऐं ज्स्ह्रीं नमः १८। ॐ ऐं फ्रूं नमः १९। ॐ ऐं क्रूं नमः २०। ॐ ह्लीं नमः २१। ॐ ऐं ल्लूं नमः २२। ॐ ऐं क्ष्म्रीं नमः २३। ॐ ऐं श्रूं नमः २४। ॐ ऐं इं नमः २५। ॐ ऐं जुं नमः २६। ॐ ऐं श्रैं नमः २७। ॐ ऐं ड्रूं नमः २८। ॐ ऐं ह्लौं नमः २९। ॐ ऐं क्लीं नमः ३०। ॐ ऐं सूं नमः ३१। ॐ ऐं हौं नमः ३२। ॐ ऐं श्व्रं नमः ३३। ॐ ऐं व्रूं नमः ३४। ॐ ऐं फां नमः ३५। ॐ ऐं ह्लीं नमः ३६। ॐ ऐं लं नमः ३७। ॐ ऐं ह्सौं नमः ३८। ॐ ऐं सें नमः ३९। ॐ ऐं ह्रीं नमः ४०। ॐ ह्रौं नमः ४१। ॐ ऐं विं नमः ४२। ॐ ऐं प्लीं नमः ४३। ॐ ऐं क्ष्म्क्लीं नमः

ankurnagpal108@gmail.com

४४। ॐ ऐं त्स्रां नमः ४५। ॐ ऐं प्रं नमः ४६। ॐ ऐं म्लीं नमः ४७। ॐ ऐं स्रूं नमः ४८। ॐ ऐं क्ष्मां नमः ४९। ॐ ऐं स्तूं नमः ५०। ॐ ऐं स्ह्रीं नमः ५१। ॐ ऐं थ्प्रीं नमः ५२। ॐ ऐं क्रौं नमः ५३। ॐ ऐं श्रां नमः ३९। ॐ ऐं म्लीं नमः ५५।

॥ इत्येकादशोऽध्यायः ॥

॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं ह्रीं नमः १। ॐ ऐं ओं नमः २। ॐ ऐं श्रीं नमः ३। ॐ ऐं ईं नमः ४। ॐ ऐं क्लीं नमः ५। ॐ ऐं क्रूं नमः ६। ॐ ऐं श्रूं नमः ७। ॐ ऐं प्रां नमः ८। ॐ ऐं क्रूं नमः ९। ॐ ऐं दिं नमः १०। ॐ ऐं फ्रें नमः ११। ॐ ऐं हं नमः १२। ॐ ऐं सः नमः १३। ॐ ऐं चें नमः १४। ॐ ऐं सूं नमः १५। ॐ ऐं प्रीं नमः १६। ॐ ऐं ब्लूं नमः १७। ॐ ऐं आं नमः १८। ॐ ऐं औं नमः १९। ॐ ऐं ह्रीं नमः २०। ॐ ऐं क्रीं नमः २१। ॐ ऐं द्रां नमः २२। ॐ ऐं श्रीं नमः २३। ॐ ऐं स्लीं नमः २४। ॐ ऐं क्लीं नमः २५। ॐ ऐं स्लूं नमः २६। ॐ ऐं ह्रीं नमः २७। ॐ ऐं व्लीं नमः २८। ॐ ऐं त्रों नमः २९। ॐ ऐं ओं नमः ३०। ॐ ऐं श्रौं नमः ३१। ॐ ऐं ऐं नमः

३२। ॐ ऐं प्रें नमः ३३। ॐ ऐं द्रूं नमः ३४। ॐ ऐं क्लूं नमः ३५। ॐ ऐ औं नमः ३६। ॐ ऐं सूं नमः ३७। ॐ ऐं चें नमः ३८। ॐ ऐं ह्लूं समः ३९। ॐ ऐं प्लीं नमः ४०। ॐ ऐं क्षां नमः ४१।

॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥

ॐ ऐं श्रौं नमः १। ॐ ऐं व्रीं नमः २। ॐ ऐं ओं नमः ३। ॐ ऐं औं नमः ४। ॐ ऐं ह्लां नमः ५। ॐ ऐं श्रीं नमः ६। ॐ ऐं श्रां नमः ७। ॐ ऐं ओं नमः ८। ॐ ऐं प्लीं नमः ९। ॐ ऐं सौं नमः १०। ॐ ऐं ह्रीं नमः ११। ॐ ऐं क्रीं नमः १२। ॐ ऐं ल्लूं नमः १३। ॐ ऐं क्लीं नमः १४। ॐ ऐं ह्रीं नमः १५। ॐ ऐं प्लीं नमः १६। ॐ ऐं श्रीं नमः १७। ॐ ऐं ल्लीं नमः १८। ॐ ऐं श्रूं नमः १९। ॐ ऐं ह्रीं नमः २०। ॐ ऐं त्रूं नमः २१। ॐ ऐं ह्रीं नमः २२। ॐ ऐं ह्लां नमः २३। ॐ ऐं प्रीं नमः २४। ॐ ऐं ॐ नमः २५। ॐ ऐं सूं नमः २६। ॐ ऐं ह्लौं नमः २७। ॐ ऐंषौं नमः २८। ॐ ऐं आं ल्क्रीं नमः २९। ॐ ऐं ओं नमः ३०।

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥

इति तन्त्ररूपेणपरिणताश्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती

॥ समाप्ता ॥

इस प्रकार श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती का पाठ पूरा होने पर प्रथम नर्वाण-मन्त्र का जप करके पश्चात् तान्त्रिक देवी सूक्त का पाठ करे। सभी कार्य नर्वाण मन्त्र के न्यास आदि तथा सप्तशती न्यास आदि पाठ आरम्भ के पूर्व की तरह होंगे।

॥ विनियोगः ॥

श्री गणपतिर्जयति ॐ अस्य श्रीनर्वाणमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दान्सि श्रीमहा-काली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐं वीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री महाकाली महालक्ष्मी महा-सरस्वती प्रीत्यर्थे विनियोगः।

॥ ऋष्यादिन्यासः ॥

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनु-ष्टुप्छन्दोभ्योनमः, मुखे। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्योनमः हृदि। ऐं वीजायनमः, नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, इति मूलेनकरौ संशोध्य............

॥ करन्यासः ॥

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यान्नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यान्नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्या-

न्नमः । ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यान्नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ।

॥ अक्षरन्यासः ॥

ॐ ऐं नमः, शिखायाम् । ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे । ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे । ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे । ॐ मु नमः वामकर्णे । ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे । ॐ यै नमः वामनासापुटे ॐ वि नमः, मुखे । ॐ च्चे नमः, गुह्ये ।

एवं विन्यस्याष्टवारम्मूलेन व्यापकं कुर्यात् ।

॥ दिङ्न्यासः ॥

ॐ ऐं प्राच्यैनमः । ॐ ऐं आग्नेय्यैनमः । ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः ॐ ह्रींनैर्ऋत्यैनमः । ॐ क्लीं प्रतीच्यैनमः । ॐ क्लीं वायव्यैनमः ॐ चामुण्डायै उदीच्यैनमः । ॐ चामुण्डायै ऐशान्यैनमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायैनमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे भूम्यैनमः ।

॥ ध्यानम् ॥

खड्गंचक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलंभुशुण्डींशिरः,
शङ्खंसंदधतींकरैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवेमहाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते परौकमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ॥ १ ॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मंधनुःकुण्डिकां,
दण्डंशक्तिमसिञ्चचर्मजलजंघण्टांसुराभाजनम् ।

शूलंपाशसुदर्शनेचदधतीं हस्तैःप्रसन्नाननां,
सेवेसैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २ ॥
घण्टाशूलहलानिशङ्खमुशले चक्रंधनुःसायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतांमहा,
पूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३ ॥

सङ्केत– इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी की पूजा करे । पश्चात् १०८ या १००८ बार नर्वाण मन्त्र का जप करना चाहिये । जप करने के पहले ही 'ऐं ह्रीं अक्षमालिकायैनमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करके निम्नलिखित मन्त्रों से माला की प्रार्थना करे —

ॐ मांमालेमहामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मेसिद्धिदाभव ॥
ॐ अविघ्नं कुरुमालेत्वं गृह्णामि दक्षिणेकरे ।
जपकालेचसिद्ध्यर्थम् प्रसीदममसिद्धये ॥

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करे । जप पूरा करके जप को भगवती को समर्पित करते हुये कहे—

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतञ्जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवित्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।

पश्चात् नीचे लिखे अनुसार सप्तशती न्यास करे ।

॥ करन्यासः ॥

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ॐ चंतर्जनीभ्यान्नमः । ॐ डि मध्यमाभ्यान्नमः । ॐ कां अनामिकाभ्यान्नमः । ॐ यै कनिष्ठकाभ्यान्नमः । ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः ।

॥ हृदयादिन्यासः ॥

ॐ ऐ स्लूं नमः खड्गिनीशूलिनीघोरा चक्रिणी गदिनीतथा । ॐ ऐं नों नमः शङ्खिनो चापिनी वाणभुशुण्डी परिघायुधा । हृदयायनमः ।

ॐ ऐं फ्रें नमः ॐ शूलेनपाहि नो देवि पाहिखङ्गेनचाम्बिके । घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिस्वनेन च । शिरसेस्वाहा । ॐ ऐं क्रीं नमः ॐ प्राच्यांरक्ष प्रतीच्याञ्च चण्डिकेरक्ष दक्षिणे । भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यान्तथेश्वरि ॥ शिखायैवौषट् । ॐ ऐं म्लूं नमः ॐ सौम्यानियानिरूपाणि त्रैलोक्यविचन्तिते । यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तभुवम् ॥ कवचायहुम । ॐ ऐंध्रे नमः ॐ खङ्गशूलगदादीनि यानिचास्त्राणितेऽम्बिके । करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्षसर्वतः ॥ नेत्रत्रयायवौषट् ॐ ऐं श्रूं नमः ॐ सर्वस्वरूपेसर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ॥ अस्त्रायफट् ।

॥ ध्यानम् ॥१

विद्युद्दाम समप्रभांमृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिःकरवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाञ्चापङ्गुणन्तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकांशशिधरांदुर्गान्त्रिनेत्राम्भजे ॥

अर्थ– जिनके अङ् की शोभा बिजली के समान हैं, जो सिंह की सवारी पर बैठी हुई भयङ्कर प्रतीत होती हैं, हाथों में तलवार व ढाल लिए ऐसी अनेक कलाएं जिनकी सेवा में खड़ी हैं, जो अपने हाथों में चक्र गदा, तलवार, ढाल, वाण धनुष, पाश, और तर्जना मुद्रा धारण किये हुये है, जिनका स्वरूप-अग्निमय है तथा जिनके माथे पर चद्रमा कामुकुट शोभा पा रहा है, ऐसी-तीन नेत्र वाली श्री दुर्गा देवी का ध्यान करता हूँ ।

इस प्रकार श्री दुर्गा देवी का ध्यान करके आगे लिखा तन्त्र रूप देवी सूक्त का पाठ करे ।

॥ तन्त्ररूपन्देवी सूक्तम ॥

ॐ ऐं ह्सों नमः १ । ॐ ऐं ह्रीं नमः २ । ॐ ऐं श्रीं नमः ३ । ॐ ऐं हूं नमः ४ । ॐ ऐं क्लीं नमः ५ । ॐ ऐं रौं नमः ६ । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ७ । ॐ ऐं म्लीं नमः ८ । ॐ ऐं प्लूं नमः ९ । ॐ ऐं स्हौं नमः १० । ॐ ऐं स्त्रीं नमः ११ । ॐ ऐं ग्लूं नमः १२ । ॐ ऐं व्रीं नमः १३ । ॐ ऐं सौः नमः १४ । ॐ ऐं लूं नमः १५ । ॐ ऐं ल्लूं तमः १६ । ॐ ऐं द्रां नमः १७ ।

ॐ ऐं क्सां नमः १८ । ॐ ऐं क्ष्त्रीं नमः १९ । ॐ ऐं ग्लौं नमः २० । ॐ ऐं स्कं नमः २१ । ॐ ऐं त्रूं नमः २२ । ॐ ऐं स्क्लूं नमः २३ । ॐ ऐं क्रौं नमः २४ । ॐ ऐं श्रीं नमः २५ । ॐ ऐं म्लूं नमः २६ । ॐ ऐं क्लूं नमः २७ । ॐ ऐं शां नमः २८ । ॐऐं ल्हीं नमः २९ । ॐ ऐं स्त्रूं नमः ३० । ॐ ऐं ल्लीं नमः ३१ । ॐ ऐं लीं नमः ३२ । ॐ ऐं सं नमः ३३ । ॐ ऐं लूं नमः ३४ । ॐ ऐं ह्सूं नमः ३५ । ॐ ऐं श्रूं नमः ३६ । ॐ ऐं जूं नमः,३७ । ॐ ऐं ह्स्ल्रीं नमः ३८ । ॐ ऐं स्क्रीं नमः ३९ । ॐ ऐं क्लां नमः ४० । ॐ ऐं श्रूं नमः ४१ । ॐ ऐं हं नमः ४२ । ॐ ऐं ह्लीं नमः ४३ । ॐ ॐ ऐं क्स्रूं नमः ४४ । ऐं ॐ द्रौं नमः ४५ । ॐ ऐं क्लूं नमः ४६ । ॐ ऐं गां नमः ४७ । ॐ ऐं सं नमः ४८ । ॐ ऐं ल्सां नमः ४९ । ॐ ऐं फ्रीं नमः ५० । ॐ ऐं स्लां नमः ५१ । ॐ ऐं ल्लूं नमः ५२ । ॐ ऐं फ्रें नमः ५३ । ॐ ऐं ओं नमः ५४ । ॐ ऐं स्म्लीं नमः ५५ । ॐ ऐं ह्रां नमः ५६ । ॐ ऐं ॐ नमः ५७ । ॐ ऐं ह्लूं नमः ५८ । ॐ ऐं ह्रूं नमः ५९ । ॐ ऐं नं नमः ६० । ॐ ऐं स्त्रां नमः ६१ । ॐ ऐं वं नमः ६२ । ॐ ऐं मं नमः ६३ । ॐ ऐं म्क्लीं नमः ६४ । ॐ ऐं शां नमः ६५ । ॐ ऐं लं नमः ६६ । ॐ ऐं भौं नमः ६७ । ॐ ऐं ल्लूं नमः ६८ । ॐ ऐं हौं नमः ६९ । ॐ ऐं ईं नमः ७० । ॐ ऐं चें नमः ७१ । ॐ ऐं ल्क्रीं नमः ७२ । ॐ ऐं

ह्ल्री नमः ७३ । ॐ ऐं क्ष्म्लरीं नमः ७४ । ॐ ऐं पूं नमः ७५ । ॐ ऐं श्रौं नमः ७६ । ॐ ऐं ह्लौं नमः ७७ । ॐ ऐं श्रूं नमः ७८ । ॐ ऐं क्स्त्रीं नमः ७९ । ॐ ऐं आं नमः ८० । ॐ क्रूं नमः ८१ । ॐ ऐं त्रूं नमः ८२ ।

॥ इति तन्त्ररूपन्देवीसूक्तम ॥

तन्त्र रूप देवी सूक्त का पाठ कर नेकेपश्चात् भगवती की प्रार्थना करता हुआ क्षमा याचना करके पाठ-कार्य समाप्त करे ।

हरिविरञ्चिमहेश्वरपूजिताम्–
भगवतीञ्जनदुर्गतिहारिणीम् ।
सकलतन्त्रमयीञ्जगदीश्वरीं –
सुखमयीञ्जगताञ्जननींभजे ॥ १ ॥

सर्वार्थसाधनकरीम्महतीमुदारां–
स्वर्गापवर्गगतिदांकरुणावताराम् ।
संसारतारणपरांहृतपापभारान्–
दुर्गान्नमामि शिरसाऽहमनन्तसाराम् ॥ २ ॥

ईटावारव्यसुमण्डलान्तर्गताऽछल्दारव्यपत्रालया–
दैशान्यान्दिशिसंस्थितेऽतिविदितेक्रोशेद्वितीयशुभे ।
विद्वद्वृन्दयुतेसलेमपुरकेग्रामेसुदेवालये–
वासन्तत्रचकुर्वतासुलिखिताप्राकाशिचैषाशुभा ॥ ३ ॥

० ३ ० २
गगनरामखनेत्रसुवत्सरे –

बुधदिनेमधुमासिसितेमया ।
भगवतीपदयोर्नवमीतिथौ–
जगतितन्त्रमयीसुसमर्पिता ॥
॥ इति श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती ॥
संवत् २०३० चैत्रसुदि नवमी बुधे ।
ता० ११-४-७३

अनुभव-सिद्ध तान्त्रिक मन्त्र

जय के लिये व दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुटित करने के लिये ।

१. सामूहिक कल्याण के लिये–ॐ ऐं दीं नमः ।
२. विश्व के अशुभ तथा भय विनाश करने के लिये–ॐ ऐं प्रेंनमः ।
३. विश्व रक्षा के लिये–ॐ ऐं यां नमः ।
४. संसार के अभ्युदय के लिये–ॐ ऐं श्वं नमः ।
५. विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिये–ऐं श्रीं नमः ।
६. विश्व के पाप व ताप आदि के निवारण के लिये–ॐ ऐं व्रूं नमः ।
७. समस्त विपत्ति नाश के लिये तथा कल्याण के लिये–ॐ ऐं ग्लौं मः ।
८. विपत्ति नाश और शुभ कल्याण के लिये–ॐ ऐंक्ष्म्लीं नमः।
९. भय नाश के लिये– (क) ॐ ऐं श्रूं नमः (ख) ॐ ऐं इं नमः। (ग) ॐ ऐं जुं नमः

१०. पाप नाश के लिये–ॐ ऐं त्रैं नमः ।
११. सर्व रोग नाश के लिये–ॐ ऐं ह्रौं नमः ।
१२. मोक्ष प्राप्ति के लिये–ॐ ऐं प्रें नमः ।
१३. स्वर्ग और मुक्ति के लिये–ॐ ऐं श्रूं नमः ।
१४. स्वर्ग और मुक्ति के लिये–ॐ ऐं प्रें नमः ।
१५. बाधा शान्ति के लिये–ॐ ऐं सें नमः ।
१६. सब प्रकार के कल्याण के लिये–ॐ ऐं स्क्लीं नमः ।
१७. शक्ति प्राप्ति के लिये–ॐ ऐं प्रीं नमः ।
१८. भगवती की प्रसन्नता के लिये–ॐ ऐं ल्लूं नमः ।
१९. विविध उपद्रव से बचने के लिये–ॐ ऐं ह्रौं नमः ।
२०. सुख के लिये–ॐ ऐं सः नमः
२१. समस्त भय दूर करने के लिये–ॐ ऐं इं नमः ।
२२. शत्रु नाश के लिये–ॐ ऐं सूं नमः ।
२३. समस्त ग्रह पीड़ाओं के नाश के लिये तथा दुःस्वप्न नाश के लिये–ॐ ऐं ह्रीं नमः ।
२४. दुष्ट लोगों की शक्ति-नाश के लिये तथा भूतप्रेतादि नाश के लिये–ॐ ऐं औं नमः ।
२५. संग्राम में भय रहित होने के लिये तथा शत्रुनाश के लिये–ॐ ऐं सूं नमः ।
२६. बालरक्षा के लिये एवं कल्याण के लिये-ॐ ऐं आं नमः ।
२७. पापनाश के लिये तथा रोगनाश के लिये-ॐऐं द्रां नमः ।

२८. दारिद्र्य नाश के लिये—ॐ ऐं ल्कीं नमः ।

२९. शत्रु भय निवारण के लिये—ॐ ऐं क्रूं नमः

३०. समस्त उत्पात तथा महामारी आदि के नाश के लिये—
ॐ ऐं प्रां नमः ।

३१. धन-धान्य-पुत्र आदि प्राप्ति के लिये तथा समस्त
बाधायें निवारण के लिये- ॐ ऐं सः नमः ।

३२. त्रैलोक्य रक्षा के लिये एवं समस्त दुष्ट जनों की दुष्टता
ॐ ऐं ज्स्ह्लीं नमः ।

३३. लक्ष्मी-प्राप्ति के लिये तथा विद्या-प्राप्ति के लिये—
ॐ ऐं ह्लां नमः ।

३४. भगवती के प्रसन्नता की लिये तथा कल्याण के लिये—
नाश के लिये-ॐ ऐं म्लों नमः ।

३५. बुद्धि सन्मार्ग पर लाने के लिये-ऐं ल्लूं नमः ।

३६. सर्प-अग्नि-जल तथा शत्रु आदि से रक्षा के लिये—
ॐ ऐं ह्रौं नमः ।

३७. यशोवृद्धि तथा समस्त कल्याण के लिये-ॐ ऐं त्रें नमः ।

३८. समस्त कार्य-सिद्धि के लिये—ॐ ऐं व्रूं नमः ।

३९. ,, —ॐ ऐं स्फ्रूं नमः ।

४०. ,, —ॐ ऐं ह्लीं नमः ।

४१. ,, —ॐ ऐं लं नमः ।

,, —ॐ ऐं गीं नमः ।

,, — ॐ ऐं यं नमः ।

,, —ॐ ऐं ह्लीं नमः ।

,, —ॐ ऐं ह्लं नमः ।

समस्तपीड़ा शान्ति के लिये—ॐ ऐं फ्रें नमः ।

संकेत - १२५००० जप करना चाहिये । अथवा श्री दुर्गा सप्तशती के मन्त्रों में सम्पुट लगा कर १०० पाठ करे ॥

॥ इत्यनुभवसिद्धतान्त्रिकमन्त्र विवरण समाप्त ॥

परिशिष्ट विषयः

भगवान शिवके प्रधान दो मन्त्र है १ षडक्षर- दूसरा पञ्चाक्षर। शिवपुराण में दोनो मन्त्रों का विशेष महत्व वर्णन किया है-

प्रमाण–अरुद्रो वा सरुद्रो वा सकृत्पञ्चाक्षरेणवा ।
अपूज्यः पूजितोवापि मूढोवा मुच्यतेनरः ॥
षडक्षरेणवा देवि तथा पञ्चाक्षरेणवा । इत्यादि

अर्थ—

किसीने चाहे दीक्षा ली हो चाहे न ली हो–पतित हो अथवा मूर्ख-यदि श्रद्धापूर्वक एक बार भी (ओ नमः शिवाय) इस षडक्षर मन्त्र का अथवा (नमः शिवाय)इस मन्त्र का जप करता है वा पूजन करता है तो वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

इसी प्रकार षडक्षर राम मन्त्र का भी बड़ा महत्व शास्त्रों में वर्णित है।

(श्रीरामायनमः) षडक्षरराममन्त्र है।
(रांरामायनमः) यह भी षडक्षर राममन्त्र है।

प्रमाण–सर्वेषांराममन्त्राणाम्मन्त्रराजः षडक्षरः ।
तारकंब्रह्मवेदोक्तं तेनपूजा प्रशस्यते॥(अ०सं०३३अ०)

अर्थ—

आगे सर्वसाधारण जनता के लिये कुछ देवताओं के मन्त्र लिखे जा रहे हैं–उनका जप करने से सर्वाभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने में कोई भी सन्देह नहीं है।

शिवमन्त्र

(ॐ नमः शिवाय) वा (नमः शिवाय)

राममन्त्र

(श्री रामायनमः) वा (रांरामायनमः) वा (ओं ह्लीं श्रीं ल्कीं ऐं रां) वा (राम)वा(रामचन्द्र) वा (हं जानकी वल्लभायस्वाहा) वा (श्री रामजयरामजयजयराम)

सन्तानगोपालमन्त्र भेद प्रकार

(१)

ॐ क्लीं श्रीं ह्लीं जौं ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते। देहि मेंतनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः स्वः भुवः भूः ओं जौं ह्लीं श्रीं क्लीं॥

"अथवा" (२)

"ॐ" क्लीं देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते ।
देहि में तनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः क्लीं ओम् ॥
इत्यादि मतभेद हैं ।

"अथवा" (३)

"ॐ" देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते ।
देहि में तनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः ।

विन्ध्यवासिनी देवी का मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ पुरुषिकिं स्वपिषिभयम्मेसमुपस्थितम् ।
यदिशक्यमशक्यंवा तन्मेभगवतिशमयस्वाहा ॥

दुर्गादेवीमन्त्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ।

महामृत्युञ्जयमन्त्र (त्र्यम्बकमन्त्र)

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् । ऊर्वारुकमिवबन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्-भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ ।

संकेत—महामृत्युञ्जय मन्त्र मैं कुछ लोग (ॐ) तीन बार लगाते हैं ।

मृत्युञ्जयमन्त्र

त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीमामृतात् ॥

अन्नपूर्णामन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णेस्वाहा

कुवेरमन्त्र

ॐ यक्षायकुवेरायवैश्रवणायधनधान्याधिपतयेधन्यधान्य-समृद्धिम्मे देहिदापयस्वाहा ।

कृष्णमन्त्र

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा । वा (क्लींकृष्णक्लीं) वा (क्लींकृष्णायगोविन्दाय गोपीजनवल्ल-भायस्वाहा ।) वा (ओंनमोभगतेवासुदेवाय)

कार्तवीर्यमन्त्र

ओं फ्रों व्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनायनमः ।

सङ्केत-इस मन्त्र के जप से नष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है ।

लक्ष्मीमन्त्र

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यैनमः ।

महालक्ष्मीमन्त्र

ओं श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै नमः (स्वाहा)

बागीश्वरी मन्त्र

ह्रीं वद वद वाग्वादिन्यैस्वाहा ह्रीं ।

बगलामुखीमन्त्र

ओं ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वांकीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ओं स्वाहा ।

बटुकभैरवमन्त्र

ॐ बटुकाय, आपदुद्धरणाय कुरुकुरु बटुकायह्रीं ।

नारायणमन्त्र

ओंनमोनारायणाय ।

गङ्गामन्त्र

ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे मां पावय पावय स्वाहा ।

महाकालीमन्त्र

(फ्रेंकरिण्याम्) वा (ॐ फ्रें फ्रें हूँ हूँ पशुगृहाण हुँ फट् स्वाहा। वा) ॐ हर हर स्तम्भस्तम्भ कील कील स्वाहा।

महागणपतिमन्त्र

[१] ॐ श्री ह्रींग्लौं गंगणपतये वरवरद सर्वजनं में वशमानयस्वाहा।

[२] "ॐ वक्रतुण्डायहुँ" इतिवा गणेशमन्त्रः

[३] वक्त्रतुण्डैकदंष्ट्रायक्लींह्रीं श्रीं गंगणपतयेवरवरदसर्वजनंमे वशमानयस्वाहा। यह त्रैलोक्य वश करने का मन्त्र है (मन्त्रमहादधौ)

उच्छिष्टगणपतिमन्त्र

ॐ हस्तपिशाचि लिखे स्वाहा।

भुवनेश्वरीमन्त्र

(ह्रीं) वा (ऐं ह्रीं श्रीं)

॥ इति देवताओं के मन्त्र समाप्त ॥

सङ्केत–यहाँ से आगे कुछ देवताओं की गायत्री लिखी जायगी।

रुद्रगायत्री–तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्।

महालक्ष्मीगायत्री–महालक्ष्म्यैविद्महे महाश्रियै धीमहितन्नः श्रीप्रचोदयात्।

हनुमद्गायत्री–हनूमतेविद्महे आञ्जनेयाय धीमहि तन्नोवीरः प्रचोदयात्।

दुर्गागायत्री–कात्यायन्यैविद्महे कन्याकुमार्य्यै धीमहि तन्नो दुर्गाप्रचोदयात्।

वागीश्वरीगायत्री–ऐं वागीश्वर्य्यैविद्महे क्लींकामेश्वर्य्यै धीमहि। सौस्तन्नः शक्ति प्रचोदयात्।

बगलामुखीगायत्री–बगलामुख्यैविद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

अन्नपूर्णागायत्री–भगवत्यैविद्महे माहेश्वर्य्यै धीमहि तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात्।

रामगायत्री–दाशरथयेविद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

रविगायत्री–सप्ततुरगायधीमहि सहस्त्रकिरणाय धीमहि तन्नो रविः प्रचोदयात्।

कृष्णगायत्री–दामोदरायविद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

ज्वरगायत्री–भस्मायुधायविद्महेंऐंक्लीं एकदन्ष्ट्राय धीमहि तन्नो ज्वरः प्रचोदयात्।

॥ इति कुछ देवताओं की गायत्री विषय समाप्त ॥

॥ मन्त्रों के विषय पर संक्षिप्त विवेचन ॥

शारदातिलक में मन्त्र तीन प्रकार के वर्णन किये हैं–पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग।

–जिस मन्त्र के अन्त में हुंफट् हो–उसे पुरुष मन्त्र अर्थात् पुल्लिङ्ग कहते हैं।

२–जिस मन्त्र के अन्त में स्वाहा हो उस मन्त्र को स्त्री मन्त्र अर्थात् स्त्री लिङ्ग कहते हैं।

३–जिस मन्त्र के अन्त में नमः हो उस मन्त्र को नपुंसक मन्त्र अर्थात् नपुंसक लिङ्ग कहते हैं।

मन्त्र महोदधि में भी इसका विवेचन सुचारु रीति से किया गया है।

१–जिस मन्त्र के अन्त में (वषट्) हो फट् हो उसे पुरुष मन्त्र जानना चाहिये।

२–जिस मन्त्र के अन्त में (वौषट्) व (स्वाहा) हो उसे स्त्री मन्त्र जानना चाहिये।

३–जिस मन्त्र के अन्त में (नमः) हो उसे नपुंसक मन्त्र जानना चाहिये। कर्म भेद से मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिये–जैसे–वशीकरण, उच्चाटत आदि में पुरुष मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये। साधारण छोटे कर्म के लिये व रोगनाश आदि के लिये स्त्री मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये। अभिचार में नपुंसक मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। शारदातिलक व मन्त्रमहोदधि में विशेष विस्तार से लिखा है।

॥ मन्त्रों के भेद ॥

१ जाग्रत २ सुषुप्त ३ मित्र ४ शत्रु ५ सौम्य ६ क्रूर ७ अतिक्रूर ८ छिन्न ९ रुद्ध १० शक्तिहीन ११ पराङ्मुख १२ बधिर १३ नेत्रहीन १४ दग्ध १५ त्रस्त १६ मलिन १७ मदोन्मत्त १८ मूर्छित १९ प्रध्वस्त २० बालक २१ कुमार २२ युवा २३ प्रौढ़ २४ वृद्ध २५ केकर २६ कूट ये मन्त्रों के भेद हैं–दुष्ट मन्त्रों का त्याग करके शुभ मन्त्र ग्रहण करना चाहिये। इनका विस्तार न रदपञ्च-रात्र आदि ग्रन्थों में है।

मन्त्रों में अक्षरों के अनुस र ५ भेद

१–एक अक्षर वाला मन्त्र "पिण्ड" कहलाता है।

२–दो अक्षर वाला मन्त्र "कर्तरी" कहलाता है।

३–तीन अक्षर से नव अक्षर तक के मन्त्र को "बीज" कहना चाहिये।

४–दस अक्षर से बीस अक्षर तक के मन्त्र को "मन्त्र" कहना चाहिये।

५–बीस अक्षर से अधिक अक्षर वाला मन्त्र "मालामन्त्र" कहलाता है। "नारदपञ्चरात्र द्वितीय राज के ७ वें अध्याय में तथा" न्त्रमहोदधि और शारदातिलक में भी वर्णन आया है।

पुंल्लिग आदि मन्त्र विचार

मन्त्राः पुन्देवताज्ञेया विद्या स्त्री देवता स्मृताः।
पुंस्त्रीनपुंसकात्मानो मन्त्रा सर्वेसमीरिताः।
पुम्मन्त्राहुंफडन्ताः स्युद्विठान्ताःस्युः स्त्रियोमताः।
नपुंसकाः नमोन्ताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा॥
इतिशारदा तिलके।

स्त्रीपुंनपुंसकाः प्रोक्तामनवस्त्रिविधावुधैः।
वषडन्तन्ताः फडन्ताश्च पुमांसो मनवःस्मृताः॥१॥
वौषट् स्वाहान्तगानार्यो हुंनमोन्ता नपुंसकाः।
इतिमन्त्रमहोदधौ।

पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग भेदानुसार मन्त्र

जिस मन्त्र के अन्त में=वषट्–फट्–हुफट हों वह पुल्लिङ्ग कहलाता है।

जिस मन्त्र के अन्त में=वौषट्–स्वाहा हों वह स्त्रीलिङ्ग कहलाता है।

जिस मन्त्र के अन्त में=नमः हो वह नपुंसकलिङ्ग कहलाता है।

(ओं शब्द का प्रनोग किन मन्त्रों में नही करना चाहिये)

वाक्चैव कामः शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते।
तदाद्येषु च मन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत् ॥१॥

जिन २ मन्त्रों के आदि में वागबीज 'ऐं' कामबीज 'क्लीं' शक्तिबीज

'ह्रीं' श्रीवीज 'श्रीं' हो तो उन मन्त्रों में 'ॐ' कार नहीं लगाना चाहिये आदि में– ये वीज स्वयं ॐकार रूप हैं।

मन्त्रों में ओंकार लगाने का नियम

प्रणवाद्यङ्गृहस्थानन्तच्छून्यन्निष्फलम्भवेत् ।
आद्यंन्तयोर्वनस्थानांयतीनाम्महतामपि ॥१॥

अर्थ–

गृहस्थ को मन्त्र के आदि में प्रणव 'ओं' लगाना चाहिये बिना प्रणव के मन्त्र जपना निरर्थक होता है। वानप्रस्थ तथा यती आदि महात्माओं को आदि तथा मन्त्र के अन्त में इस प्रकार दो बार 'ओं' लगाना चाहिये यथा "ओनमः शिवाय शिवायनमः ओम्" अथवा ओं नमः शिवाय ओम्।

जपे होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि।
अशून्यन्तुकरङ्कुर्यात् सुवर्णरजतैः कुशैः ॥

अर्थ–

जपमें-होममें - दानमें वेदपाठ आदि के स्वाध्याय में तथा पितृ–कर्म में अर्थात् तर्पण व श्राद्ध आदि में सूवर्ण-चांदी-कुश इन तीनों से अथवा इनमें से किसी भी एक से युक्त हस्त अवश्य होना चाहिये अन्यथा सब कर्म निष्फल हो जाता है। आशय यह है कि पवित्री कुश की हो अथवा सोने या चांदी का छल्ला या अगुंठी युक्त हस्त से कार्य करना चाहिये।

॥ नवार्णमन्त्रार्थसंक्ङेतः ॥

ओमिति

व्याख्या – सिद्धानाञ्चैवसर्वेषाम्वेदवेदान्तयोस्तथा
अन्येषामपिशास्त्राणान्निष्ठाप्योङ्कारउच्यते ॥

व्याख्या–अवधातुर्गतिकर्मा - प्रवेशकर्माचअव्यतेप्रविश्यते गुणैरिति ओम् अथवा अवति प्रविशतिगुणानिति ओम्।

अवधातोः "अवतेष्टिलोपः" इत्यनेनोणादिसूत्रेण मन्प्रत्यये टिलोपे सति " ज्वरत्वर० " इत्यादि कृदन्त सूत्रेण वकास्योपधायाश्चदूयोरुठोः सवर्णदीर्घत्वे गुणोसति। ओम्' इति सिद्धयति। अवतिरक्षति। जानाति-गच्छति व्याप्नोति। प्रकाशयति। प्रीणयति। वर्द्धयति। लीनङ्करोति ददाति। हिनस्ति। आलिङ्गयति। प्रदर्शयति। दीप्यति इच्छति। चालयति। पाचयति तर्पयति इत्यादयोऽनेकेऽर्थाः-। सन्ति। कृन्मजन्त इत्यनेनाव्ययत्वम्। स्वारादिनिपातमव्यम्।
॥ इतिसुत्रेणवाव्ययत्वम् ॥

अर्थ

जो संसार से पार करे। जो संसार को अपने मन में लीन करे। जो अनेक सुख प्रदान करे। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि को नाश करे जो उपासक को अपने मन से सम्बन्धित करे। जो आत्मदर्शन करावे जो प्रकाश से अज्ञान नष्ट करे। जो प्राणियों को सन्मार्ग पर लगावे। जो

संसार का चालक है जो सर्वज्ञ है। जो निराकार है। जो समस्त चराचर का आधार है। इत्यादि ॐ के अनेक अर्थ है।

ओम्—यह अ यय वाचक पद है, तीनों काल में लीनों लिङ्गों में सभी विभक्तियों में सदा एक सा रहने वाला है इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं हो सकता है। अतएव विकारी के साथ उसका प्रयोग नहीं होता है, केवल परमात्मा आदि में युक्त होता है।

ॐ इतिस्मरणादेव ब्रह्मज्ञानं परावरम्।
तदेकमोक्षसिद्धिञ्च तमेवामृतमश्नुते ॥

॥ नवार्णमन्त्र: ॥

"ॐ" ऐंह्रींक्लींचामुण्डायैविच्चे।

नवार्ण मन्त्रका उद्धर देव्यथर्वशीर्षउपनिषत् में।
वाङ्-माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् ॥
सुर्योऽवामश्रोत्रविन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयक: ॥
नारायणेन संमिश्रोवायुश्चाधरयुक्तथा ॥
विच्चेनवार्णकोऽणु: स्यान्महदानन्ददायक: ॥

। व्याख्याहिन्दीभाषामें।

वाक्=वाक् वीज-ऐं
माया=मायावीज—ह्रीं
ब्रह्मसू: कामवीज—क्लीं
तस्मात्षष्ठम्=कामवीजके ककारसे छठा अक्षर च हुआ
वक्त्रसमन्वितम्=दीर्घआकार से युक्त (च)चा हुआ।
सुर्य=सुर्यकाअर्थमकारहुआ—म
अवामश्रोत्रम्=पच्चमस्वर—उकारहुआ इससे मु-बना

विन्दु:=अनुस्वार लगाने से —मुम् सिद्ध हुआ।
टात्तृतीयक:=टअक्षरसेतृतीयअक्षर—ड=हुआ।
नारायणेनसंमिश्र:=दीर्घाकारसेयुक्तड—डा हुआ।
वायु:=यकार को कहते हैं=य सिद्ध हुआ
अधरयुक्= अधरोष्ठकाअर्थ वारहवाँस्वर- ऐ हुआ-य में ऐ स्वरलगानेसे—यै सिद्धहुआ।
विच्चे=बिच्चेकासम्बन्ध करने से ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै-विच्चे,, मन्त्रवना।
नवार्णको=नव-अर्णक: अर्ण शब्दका अर्थवर्ण है अर्थात् नववर्णवाला मन्त्र—नवार्णमन्त्र है।
अणु=काअर्थ मन्त्र है
=महदानन्ददायक:।=उपासकों को आनन्ददायक है।

डामरतन्त्रोक्तनवार्णकाअर्थ

श्लोक—निर्धूतनिखिलध्वान्ते[१] ! नित्यमुक्ते[२] ! परात्परे[३] !
अखण्डब्रह्मविद्यायै[४] चित्सदानन्दरूपिणि[५] ॥१
अनुसन्दध्महे[६] नित्यं[७] वयंत्वांहृदयाम्वुजे। इत्थं विशदयत्येषा कल्याणीयानवाक्षरी ॥ २ ॥
व्याख्या—ऐंह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे यहनवार्णमन्त्र है इसमें—ऐं—ह्रीं— क्लीं—चामुण्डायै— वित्—च- ई—ऐसे

सात पद हैं। पुर्व के तीन पद संबोधन हैं। चामुण्डायै यह पद तादर्थ्य में चतुर्थी है। वित्–च–इ ये पद संबोधन रूपसे ऐं–ह्रीं–क्लीं–इनके विशेषण है डामर तन्त्रके प्रथमश्लोक में भी सात पद है-अतः नवार्णमन्त्र के सातपदों का अर्थ क्रमशः जान लेना चाहिये। जोपद विशेषण है उनको विशेष्य ऐं-ह्रीं-क्लीं में लगाकर अर्थ जानना चाहिये।

(इ) अस्य-आनन्दब्रह्मणः स्त्री ई तत्संबोधने ह्रस्वेकृते-इ -इति ऐसी व्युत्पत्ति जानना चाहिये अर्थात् आनन्द-ब्रह्म महिषि।

(चामुण्डायै) चमूं सेनांवियदादिसमूहरूपां डाति(लाति) आदत्ते इति चामुण्डा। डलयोरभेदइति बोद्धव्यम्। पृषोदरादित्वात्सर्वंसुस्थमित्याहु अखण्डब्रह्मविद्यैवचामूण्डापदस्यार्थमाहुरिति केचिदाचार्याः। अन्येतु-चामुण्डाशब्दो मोक्षकारिणीभूतनिर्विकल्प वृत्तिविशेषपरः। चामुण्डायै अत्रतुातदर्थ्ये चतुर्थी ज्ञेया।

१– निर्धूतनिखिलध्वान्तत्वम्=ज्ञानेनैवाखिलाज्ञाननाशत्वम्–अर्थात् ज्ञानकेही द्वारा समस्त अज्ञाननाश अतएव चिद्रूप महासरस्वती वाग्भववीज ऐसे संबोधित की जाती है।

२– नित्यमुक्तत्वम् = त्रिकालावाध्यत्वकल्पितवियदादिप्रपञ्चनिरासाधिष्ठानत्वम् अर्थात् त्रिकाल में सदा एक रूप तथा कल्पित सभी प्रपञ्चों से रहित। अतएव–सद्रूपात्मक महालक्ष्मी माया (ह्रीं) वीज से संबोधित की जाती है।

६– परात्परत्वम् =परउत्कृष्टःसर्वानुभवसंवेद्य आनन्द एव तस्यैवपुरुषार्थत्वात्। आत्मनःकामाय सर्वंप्रियं-भवतीतिश्रुत्या तदितरेषामपि तदर्थत्वेनानन्दस्यैव सर्वशेषितयापरत्वात्। सचमानुषानन्दमारभ्योत्तरोत्तरं शतगुणाधिक्येन श्रुतौ वहुविधोवर्णितः। तेषुपरमातिशायी स एको ब्रह्मणआनन्द इति परमावधित्वेनाम्नात एवपरात्परत्वम्। अर्थात् मनुष्यों के आनन्द से लेकर उत्तरोत्तर असङ्ख्येय आनन्दों से युक्त परमानन्द स्वरूप। अतएव–आनन्द स्वरूप प्रधान महाकाली कामवीज (क्लीं) से संवोधित की जाती है।

सच्चिदानन्दात्मक ब्रह्मरूपत्वादेव शक्तेरपित्रिरूपत्वम् सुस्पष्टमेव=अर्थात् सच्चिदानन्द रूप होने से शक्ति के भी तीन रूप (ऐं) महासरस्वती (ह्रीं) महालक्ष्मी (क्लीं) महाकाली हुये।

त्वांहृदयकमले अनुसंदध्महे अर्थात् हृदय कमल में चिन्तन करता हूँ अथवा धारण करता हूँ।

नवार्ण मन्त्र का अर्थ–हेचित् स्वरूपिणी सरस्वती! हे सत्स्वरुपिणी महालक्ष्मी! हेआनन्दस्वरूपिणी महा-काली! ब्रह्मविद्या पाने के लिये हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं।

सरल अर्थ–हे महाकाली – महालक्ष्मी–महासरस्वती स्वरूपिणी दुगादेवी आपको नमस्कार है हमारा मनोऽभीष्ट पूर्ण कीजै।

। नर्वाण मन्त्र में ओम् लगाने का विचार ।

१ २ ३ ४

श्लोक–वाक् चैवकाम: शक्तिश्च प्रणव: श्रीश्चकथ्यते।
तदाद्येषु चमन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत्।

अर्थ–जिन मन्त्रो के आदि में १ ऐं, २ क्लीं ३ ह्रीं ४ श्रीं, हों तो उन मन्त्रों के आदि में ॐ नहीं लगाना चाहिये। अत: नवार्ण मन्त्र में ॐ नहीं लगाना चाहिये। हम लोगों की यही गुरु परंपरा है।

सङ्केत—नवार्णमन्त्र के ऋष्यादितथाषडङ्गन्यासादिका तथा जप का महत्व मेरुतन्त्र-कात्यायनी-तन्त्र-चिदम्बरर स्य आदि ग्रन्थों में विशेश विस्तार से वर्णन है। नवार्णमन्त्र तान्त्रिक ग्रन्थों में मन्त्रराज माना गया है। इससे बढ़कर दूसरा मन्त्र नहीं है।

ऐं–ह्रीं–क्लीं–शक्तियों पर विमर्श

इन बीजों में 'ऐं' बीज असङ्ख्य शक्तियों का बीज है। दुर्गा का तो प्रधान बीज हे अत: ७०० मन्त्र जो दुर्गा सप्तशती के हैं उनमें प्रति मन्त्र में

'ऐं' बीज लगाने का विधान तान्त्रिक ग्रन्थों में हैं। निम्नलिखित कुछ ही देवताओं के 'ऐं' बीज का निर्णय लिखा जा रहा है।

प्रमाण–तत्र–कोष

'ऐं' यह बीज किन-किन शक्तियों का है कुछ ही नाम निर्देश किये जा रहे है।

दुर्गाबीज	कृषाङ्गिनी बीज
वाग् (सरस्वती) बीज	मात्राद्वादशी बीज
त्रिपुरा बीज	विभु बीज
धन्या बीज	विभूति बीज
पद्मा बीज	अधरोष्ठ बीज
मातृकेस्वर बीज	परब्रह्म बीज
शक्ति बीज	निरञ्जन बीज
विजय: बीज	मूर्घ बीज
विस्वमोहिनी बीज	रमण बीज
भैरवी बीज	धाम बीज
आत्मज्ञान बीज	भौतिक बीज
ऊर्ध्व बीज	मातृकाबीज
अंशुमान् बीज	बर्मबीज
इन्द्राणी बीज	लोहिता बीज
गणेस्वरी बीज	चन्द्र बीज
चाण्डिकेस्वर बीज	
जगद्योनि बीज	
पीठेश बीज	
सद्बीज	
बिमल बीज	

सङ्केत–इनके अतिरिक्त और भी शक्तियों के बीज हैं।

(तन्त्रकोष से)

ह्रीं बीज का निर्णय

लक्ष्मी बीज
करुणा बीज
भुवनेश्वरी बीज
भुवना बीज
रसज्ञा बीज
वाणी बीज
क्षामा बीज
सकला बीज
शम्भु कान्ता बीज आदि

क्लीं बीज का निर्णय

काली बीज
कुसुमायुध बीज
कृ ण बीज
कुन्ती बीज
क्लेद बीज
त्रैलोक्यमोहन बीज
त्रिभूति बीज
पञ्चशर बीज
पञ्चास्य बीज
मनोभूः बीज
मनोहरी बीज
मन्मथ बीज
मार बीज
मीनकेतु बीज आदि

(तन्त्र कोष से)

कुछ वीजमन्त्रों के अर्थ लिखे जा रहे हैं।

हौं–प्रसाद बीज है हकारः=शिव। औकारः सदाशिवः।
बिन्दु =दुख नाशकः।
अर्थ –शिव व सदाशिव की कृपा से मेरे समस्त दुःख नाश हों।

दुः- दुर्गा वीज है। दः दूर्गा। उकारः=रक्षा। विन्दु का अर्थ करो।
अर्थ–हे मादुर्गे मेरी रक्षा करो।

क्रीं–काली वीज अथवा कूर्पर वीज है। कः=काली। रः=ब्रह्म। ई=माया। विन्दु= विश्वमाता।
अर्थ – दुःखनाशक। ब्रह्म शक्ति रुपिणी महामाया काली मेरे दुःखों को नाश करो।

ह्रीं=शक्ति बीज अथवा मायावीज है। ह॥ शिवः। रः= प्रकृतिः। ई= माया= विन्दु= दुःख नाशक अथवा विश्वमाता।
अर्थ–शिवयुक्त विश्वमाता महामाया शक्ति मेरे दुःखों को नाश करो।

श्रीं= लक्ष्मी बीज है श= महालक्ष्मी। रः=धन सम्पत्ति। ई= तुष्टि। विन्दु= विश्वमाता अथवा दुःखनाशक।
अर्थ= धन सम्पत्ति-तुष्टि-पुष्टि की अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी मेरे दुःखों को नाश करो।

ऐं=सरस्वती= वीज है। ऐ= सरस्वती। विन्दु= दुःख नाशक। देवी सरस्वती मेरे दुःखों को नाश करो।
सङ्केत— ऐं यह बहुत देवताओं का भी वीज है।

॥ कतिपयवीजमन्त्रोंकेअर्थ ॥

क्लीं=कृष्ण बीज अथवा काम अर्थात् काली वीज है कः= कृष्ण। क = काली। ल =इन्द्रः ई = तुष्टि आदि। बिन्दु=विश्वमाता—विन्दुः=दुःख नाशक।
अर्थ–हे सर्वश्रेष्ठ मन्मथ श्रीकृष्ण मुझे सुख और शान्ति दो। अथवा - महामाया कालीमेरे समस्त दुःख दूर करो।

हूं = वर्म बीज अथवा कूर्च बीज है । ह: =शिव: । ऊ = भैरव: । विन्दु:=सर्वोत्कृष्ट: । विन्दु:= दु:ख नाशक ।

अर्थ—सर्वश्रेष्ठ भगवान् शिव मेरे दुखों: को नाश करो ।

गं= गणेश बीज है । ग: = गणेश: । विन्दु:=दु:खहरण । हे गणेश मेरे दु:ख नाश करो ।

ग्लौं=गणेश बीज है । ग:=गणेश । ल:=व्यापार: । ल:= तेज । विन्दु = दु:ख नाशक ।

अर्थ – हे ज्योतिर्मय भगवान् गणेश मेरे दु:खों को दूर करो ।

क्ष्रौं= नृसिंह बीज है । क्ष:=नृसिंह: । र = ब्रह्म । औ = ऊर्ध्वदन्त । विन्दु = दु:ख नाशक ।

अर्थ—हे ब्रह्म स्वरुप उर्ध्वदन्त नृसिंह मेरे दु:खों को नाश करो ।

स्त्रीं= वधू बीज है । स: दूर्गोत्तारण । त:=नारक । र:= मुक्ति: । ई=माया । विन्दु=दु:ख नाशक: । विन्दु= विश्वमाता ।

अर्थ— हे दु:खोत्तारिणी मुक्तिस्वरूपा-माता भगवती महामाया मेरीं दु:खों से रक्षा करो ।

सङ्केत—एक ऐं वीज के अनेक अर्थ हैं । कुछ लिख दिये हैं । तन्त्र रूप में परिणत श्रीदुर्गासप्तशतीं के ७०० मन्त्र एक तपोमूर्ति-परमवीतराग-परमहंस-परिव्राजका-

चार्य महात्मा से संवत् २००० आश्विन मास में प्राप्त हुये थे । वे ७०० मन्त्र तथा अन्यान्य विशेष उपयोगी विषय सहित 'श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती' के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं । इनका पाठ करने से समस्त दूर्गापाठ का फल प्राप्त होता है । इन ७०० वीज मन्त्रों के पाठ में कवच-अर्गला कीलक-रहस्यत्रय शापोद्धार-उत्कीलन-कुञ्जिका स्तोत्र आदि कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है । केवल आदि तथा अन्त में नवार्णमन्त्र का जप यथेच्छआवश्यक है । पुस्तक "श्रीतन्त्रदुर्गासप्तशती" नि:शुल्क मिलती है केवल डाकव्ययप्रथमभेजना होगा । लेखक—**शिवदत्त शास्त्री**

पुस्तक मगाने का पता—

(१) **श्री चन्द्रशेखर त्रिपाठी**
एम. ए., एल. टी. (डी. जी. पी) लेक्चरार
मकान नं० ७३ मोहाल ठाकुरान
मु० पो० -- लखना
जि० इटावा (उ० प्र०)

(२) श्री कुमुदेशचन्द्र जैन ४८/१६२
रेशम गली पचकुआ जनरल गंज
कानपुर-१

॥ विशेषआवश्यकशुद्धाशुद्धपत्र ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	संकेत
पुराण	पुराणे	१	३
एवमेव	एवमेव	१	४
वंकित	क्वचित्	२	२४
यथेच्छ	यथेच्छ	३	८
वस्तत:	वस्तुत:	५	२२
घण्हा	घण्टा	७	७
मध	मधु	७	२०
खड्ग	खड्ग	७	१२
यान्त्रादि	यन्त्रादि	९	१७
लीलोपकाराय	लोकोपकाराय	१०	४
पराद्धे	परार्द्धे	११	१२
सूर्यै	सूर्ये	११	१८
दीर्वायु:	दीर्घायु:	१२	१
षट्कोनेपु	षट्कोणेषु	१३	यन्त्र विवरण
बिन्दुमध्ये	विन्दुमध्ये	१४	पंक्ति २
त्वैवनम:	मृत्यवेनम:	१४	१०
क्तदन्तिकायै	रंरक्तदन्तिकायै	१४	११
शाकम्र्य्यैन:	ॐशांशाकम्भर्य्यैनम:	१४	१२
ब्रह्म्यैनम:	व्रांब्राह्म्यैनम:	१४	पंक्ति १९
निऋंतपनम:	निऋतयेनम:	१६	,, ९
पश्चिमनिऋतयो:	पश्चिमनिर्ऋतयोः	१६	,, ११

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ		संकेत
खंखङ्गणपनमः	खंखड्गायनमः	१६	,,	१५
शंत्रिशूलायनमः	त्रिंत्रिशूलायनमः	१६	,,	१७
प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त	प्राणप्रतिष्ठापर्यन्त	१७	,,	७
आवम्पक	आवश्यक	१७	,,	११
नवार्ग्मन्त्र	नवार्णमन्त्र	१८	,,	३
महासस्वत्योदेवता	महासरस्वत्योदेवताः	१८	,,	६
ऋषिभ्यो	ऋषिभ्यो	१८	,,	१३
गृह्ये	गुह्ये	१८	,,	१५
अङ्कण्यास	अङ्गन्यास	१८		२१
स्थापत	स्थापित	१८		२१
करन्लास	करन्यास	१८		१८
स्पर्श	स्पर्श	१९		२
वन्दत	वन्दन	१९		३
अङ्गलियों	अङ्गुलियों	१९		७
बिच्चे	विच्चे	१९		१५
बिच्चे	विच्चे	१९		१७
स्पर्श	स्पर्श	२०		४
एँ	ऐं	२०		११
वाक्वों	वाक्यों	२०		१९
दक्षि	—	२१		९
चापगदेषु	चक्रगदेषु	२१	पं० १५	श्लोक
भूषावृताम्	भूषावृताम्	२१	पं०	१६
अविन्घं	अविघ्नं	२२	,,	११
शाकम्भरीभीमः	शाकम्भरीभीमाः	२३	,,	३
खङ्गनी	खड्गिनी	२३		७

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ		संकेत
शूलनपाहि	शूलेनपाहि	२३		१०
अङ्गष्ठाम्यान्नमः	अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः	२३		९
विचरन्तित	विचरन्तिते	२३		१६
सर्वेशे	सर्वेशे	२४		१
ऊँस्लंनमः	ॐस्लूं नमः	२४		४
ऊँफंनमः	ॐ फ्रेंनमः	२४		५
खङ्गूलगदा	खड्गशूलगदा	२४		८
ऐंह्लीं	ॐ ऐंह्लीं	२५	मन्त्र	११
मनः	नम	२५	मन्त्र	२४
सूं नमः	ॐ ऐं सूं नमः	२४	मन्त्र	८४
ऊँ छां नमः	ऊँ ऐं छां नमः	२७	,,	१०३
ऐं श्रीं नमः	ऊँ ऐं श्रीं नमः	२७	,,	२
ऐं ह्रीं नमः	ऊँ ऐं ह्रीं नमः	२७	,,	४
ऊँ यूं नमः	ऊँ ऐं यूं नमः	२८	,,	३४
ॐ ऐं मैं ममः	ॐ ऐं मैं नमः	२८	,,	४६
ॐ ऐं क्लीं नमः	ॐ ऐं क्लीनमः	२८	,,	६२
ॐ ऐं क्रौं शमः	ॐ ऐं क्रौं नमः	२९	,,	२६
ॐ ऐंम्लूं मनः	ॐ ऐं म्लूं नमः	३०	,,	२६
ॐ ऐं ॐ त्रोनमः	ॐ ऐं त्रों नमः	३१	,,	६
ॐ ऐंग्लूं तमः	ॐ ऐंग्लूं नमः	३२	,,	९६
ॐ छीं छीं क्लींनमः	ॐऐं छीं क्लींनमः	३२	,,	९७
ॐ ऐं छ्रां नमाः	ॐ ऐं छ्रां क्लींनमः	३२	,,	१८
ॐ ऐं फ्रौं मनः	ॐ ऐं फ्रौं नमः	३५	,,	१३
ॐ ऐं ह्रस्लीं समः	ॐ ऐं ह्स्लींनमः	३५	,,	६२
ॐ क्लूं नमः	ॐ ऐं क्लूं नमः	३७	,,	३३

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ		संकेत
ॐ ऐं क्रूं तमः	ॐ ऐं क्रूँ नमः	३७	मन्त्र	३५
ॐ श्रीं नमः	ॐ ऐं श्रीं नमः	३८	"	३
ॐ ह्लीं नमः	ॐ ऐं ह्लीं नमः	३८	"	२१
ॐ ह्लौं नमः	ॐ ऐं ह्लौं नमः	३८	"	४१
ॐ ऐं ह्लूँ समः	ॐ ऐं ह्लौं नमः	४०	"	३९
नर्वाण नवार्णा	नवार्णं	४१	पंक्ति	३
नर्वाण	नवार्णं	४१	"	५
नर्वाणमन्त्रस्य	नवार्णमन्त्रस्य	४१	"	८
प्रत्यिर्थेविनियोगः	प्रीत्यर्थेजपेविनियोगः	४१	"	१२
ॐ यैं नमः	ॐ यैं नमः	४२	"	६
परौकमल जो	हरोकमलज्ञो	४२	"	१९
हस्तैंप्रसन्नाननां	हस्तैःप्रसन्नाननां	४३	"	१
पजा करे	पूजा करैं	४३	"	८
परिकल्पयणे	परिकल्पय		"	
स्वाहा	स्वाहा	४३	"	१६
विचन्ति	विचरन्ति	४४	"	१४
ॐ ऐं ल्लूंतमः	ॐ ऐं ल्लूँनमः	४५	"	२०
ॐ ॐ ऐं क्लूंनमः	ॐ ऐं क्लूंनमः	४६	"	११
ऐं ॐ ब्रौं नमः	ॐ ऐं ब्रौं नमः	४६	"	११
देवीसूक्तम	देवीसूक्तम्	४७	"	५
द्वितीय शुभे	द्वितीयेशुभे	४७	"	१७
भंकैवान	भगवान्	५२	"	२
उद्धर	उद्धार	ख	"	११
ऐंह्रींचामुण्डायैविच्चे	ऐंक्लींचामुण्डायैविच्चे	ख	"	११